डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26
ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 322 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | शनिवार 07 सितम्बर 2024 | मूल्य 2 रुपया

डॉ संगतानी के यहां आगजनी के दो आरोपी और धराए

मंदसौर, 06 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। बड़े अस्पताल के सामने डॉ भरत संगतानी के देव डायग्नोसिस में आग लगाने के मामले में पुलिस ने उनके रिश्तेदार कमलेश होतवानी को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। अब कमलेश के भाड़े के आदमी भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिए है। आरोप है कि इन्हें कमलेश ने आग लगाने का ठेका दिया था।

पुलिस ने बताया कि 28-29 मई 2024 की मध्य रात्रि में चर्चित आगजनी की घटना जो कि बड़े अस्पताल के सामने स्थित देव डायग्नोस्टिक सेंटर में हुई थी। इस दौरान घटना के मुख्य आरोपी कमलेश कुमार होतवानी को पूर्व मे गिरफ्तार किया जाकर न्यायालय पेश किया गया था। जो वर्तमान में न्यायिक अभिरक्षा में है। पुलिस ने उपरोक्त प्रकरण के 02 अन्य आरोपी को गिरफ्तार करने मे सफलता प्राप्त की है। उक्त घटना के आरोपी नागेश पिता घनश्याम भांभी उम्र 36 साल निवासी ग्राम रलायता थाना वायडी नगर मंदसौर को मुख्य आरोपी ने आग लगाने का जिम्मा दिया था। आरोपी के संबध मे न्यायालय से पुलिस रिमांड प्राप्त कर गिरफ्तार किया है। आरोपी की निशादेही पर घेराबंदी कर ग्राम रलायता मंदसौर से एक अन्य आरोपी रवि पिता देवीलाल मेहतर को भी गिरफ्तार करने मे सफलता प्राप्त की है। दोनो को न्यायालय मेंपेश किया गया है। जहां से उन्हें जैल भेज दिया गया है।

संस्कृत-भूगोल के स्वीकृत पदों को अतिशेष बताया...

संस्कृत विषय के पद शून्य कर दिए, अतिशेष शिक्षकों के मामले में कई विसंगतियां

भोपाल/मंदसौर, 06 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। शहर सहित प्रदेश भर में हजारों शिक्षक अतिशेष हैं। इसमें कई विसंगतियां सामने आ रही है। इस समय इनकी काउंसलिंग चल रही है। शिक्षा पोर्टल पर जो पद रिक्त बताए गए है, वह पहले से भरे हुए हैं। साथ ही अनेक ऐसे मामले सामने आ रहे हैं, जिसमें जिन पदों को रिक्त बताया गया उन्हें बीच में ही समाप्त कर दिया गया। इसमें अतिशेष केनाम पर स्कूलों में संस्कृत, भूगोल व समाजशास्त्र विषय के पद समाप्त कर दिए गए हैं। जिससे अब स्कूलों में संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों की पढाई पर संकट खड़ा हो जाएगा। अतिशेष शिक्षकों की काउंसलिंग के दौरान विभाग ने पोर्टल पर हायर सेकेंडरी स्कूलों में उच्च ..... शेष पेज 4 पर

एक-दो घंटे पढ़ाकर कर रहे कलेक्टर-एसपी बनाने का दावा

मंदसौर, 06 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। नई दिल्ली में बेसमेंट में पानी भरने से हुए हादसे के बाद मंदसौर में नगरपालिका अधिकारियो ने बेसमेंट सर्वे की नौटंकी की। इसमें अभी तक किसी पर कारवाई नहीं की गई। इधर एक और मामला यह है कि नियमों को ताक पर रखकर चल रहे कोचिंग संस्थाओं की जांच आज तक नहीं हुई। वैसे तो आईएएस और आईपीएस की कोचिंग के लिए कोटा, इंदौर और दिल्ली जैसे शहर सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। जहां आठ घंटे तक पढ़ाई करवाई जाती है। लेकिन, मंदसौर के शिक्षा माफियाओं ने दिल्ली को भी पिछे छोड़ दिया। यहां कई कोचिंग सेंटरों पर एक-दो घंटे पढ़ाकर आईएएस और आईपीएस बनाने के दावे किए जा रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अधिकांश कोचिंग सेंटरों पर फीस एडवांस ली जाती है। इसके अलावा अन्य नियमों को ताक पर रखकर कोचिंग सेंटर शहर ही नहीं, बल्कि जिलेभर में संचालित हो रहे हैं।

मंदसौर के शिक्षा माफियाओं ने दिल्ली को पीछे छोड़ा

नियमों को ताक पर रखकर चल रहे कोचिंग सेंटर, प्रशासन नहीं करता कोचिंग संस्थानों की जांच

शहर में सारे नियमों को ताक पर रख कर कोचिंग संस्थानों का संचालन हो रहा है। कोचिंग संस्थानों के पास समुचित भवन का अभाव है। साथ ही वहां छात्रों के बैठने के भी उचित व्यवस्था नहीं होती है। पड़ताल में पाया गया है कि शहर के व्यवसायिक और पॉश इलाकों में कोचिंग संस्थान कुकुरमुत्ते की तरह खुले हैं। लेकिन, वहां भवन की समुचित व्यवस्था नहीं है। कई कोचिंग संस्थान एक कमरे या हॉल में ही संचालित होते है, जहां पढ़ने वाले छात्रों को भेड़-बकरी की तरह बैठाया जाता है। सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि जब बैठने की समुचित व्यवस्था नहीं है तो पठन-पाठन भी ठीक से नहीं होगा। पेयजल एवं शौचालय की व्यवस्था भी नहीं है। कई कोचिंग संस्थानों के तो नाम के बोर्ड तक गायब है। प्रशासनिक स्तर पर भी कोई कारगर कदम नहीं उठाया गया है। नियमों को ताक पर रखकर कोचिंग का संचालन किया जा रहा है।

नहीं है सुरक्षा के पर्याप्त प्रबंध...

कोचिंग संस्थान के संचालन के लिए भवन नेशनल बिल्डिंग कोड के अनुसार होना चाहिए। वहीं विद्यार्थयों के पठन-पाठन के लिए बैठने की व्यवस्था से लेकर सुरक्षा उपकरण से लैस कमरा होना चाहिए। समुचित भवन जिसमें डबल डोर व हवादार कमरा, पानी टंकी के अलावा अग्निशमन के सारे उपकरण मौजूद होने चाहिए। अग्निशमन गैस सिलेंडर, बालू भरी बाल्टी आदि भी कोंचिंग संस्थानों में होना चाहिए। भवन तक फायर ब्रिगेड की गाडी पहुंचने का रास्ता होना चाहिए, ताकि विशेष परिस्थिति में दल मौके पर पहुंचकर बचाव कर सके।

भगवान भरोसे सुरक्षा के उपाय...

शहर में कोचिंग संस्थानों में सुरक्षा के उपाय भगवान भरोसे है। कोचिंग संस्थानों में अग्निशमन का कहीं विशेष प्रबंध नहीं देखने को मिलता है। साइकिल स्टैंड से लेकर कमरों में पंखों तक की कमी भी खटकती है। अधिकांश कोचिंग संस्थानों में शौचालय एवं पेयजल की कमी भी देखने को मिली। कई कोचिंग संचालकों ने बताया कि उन्हें फिलहाल प्रशासन द्वारा किसी प्रकार का कोई दिशा निर्देश नहीं मिला है।

ये हैं कोचिंग संस्थानों के लिए नियम...

- कोचिंग संस्थान चलाने के लिए शिक्षा विभाग से अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त कर नगरीय निकाय से अनुज्ञा लेनी होती है।
- कोचिंग इंस्टीट्यूट संचालन के लिए कम से कम 3 हजार स्क्वायर फीट क्षेत्रफल निर्धारित किया गया है।
- जहां कोचिंग सेंटर संचालित हो रहा है, वहां की सड़क 40 चौड़ी फीट होनी चाहिए। दुपहिया और कार पार्किंग भी होनी चाहिए।
- जिस भवन में कोचिंग सेंटर चलाया जा रहा है, वहां छात्रों के लिए केंटिन, कोचिंग कार्यालय, स्टाफ रूम होना आवश्यक है।
- कोचिंग संस्थानों में पढाने वाले शिक्षकों की योग्यता और उनका अनुभव बोर्ड पर लिखा जाना जरूरी है।
- कोचिंग संस्थानों को जीएसटी पंजीयन कराना और उसकी नियमित रिटर्न दाखिल करना भी जरूरी है।

ऑटो रिक्शा-नगर सेवा वाहनों के पहिए थमे, किया प्रदर्शन

मंदसौर, 06 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। शुक्रवार को शहर में ऑटो रिक्शा और मैजिक चालक हड़ताल पर रहे। आरटीओ और पुलिस द्वारा कार्रवाई के नाम पर अभद्र व्यवहार करने का आरोप लगाया गया। एक दिन पहले ही ऑटो रिक्शा बंद रखने की घोषणा इनके द्वारा की गई थी। इसके बाद शुक्रवार को गांधी चौराहा पर प्रदर्शन भी किया गया।

इस दौरान विधायक विपीन जैन भी चालकों के साथ प्रदर्शन में शामिल हुए। इधर सांसद सुधीर गुप्ता को भी चालकों ने समस्या से अवगत कराया। इस दौरान प्रशासन को एक ज्ञापन भी दिया गया। यूनियन के अध्यक्ष हिम्मत डांगी ने बताया कि विभाग के अधिकारियों द्वारा चालकों को कार्रवाई के नाम पर जबरन परेशान किया जा रहा है। अभद्र भाषा का उपयोग अधिकारी कर्मचारी कर रहे हैं। जिसका विरोध किया जा रहा है।

गोस्वामी समाज ने शव के साथ तहसील कार्यालय के सामने किया प्रदर्शन

कयामपुर, 06 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। गोस्वामी समाज द्वारा शव को लेकर तहसील कार्यालय के सामने प्रदर्शन किया गया। दरअसल गोस्वामी समाज द्वारा कयामपुर में श्मशान हेतु भूमि आवंटन की मांग की जा रही है। क्षेत्र के लगभग 10 परिवार ऐसे हैं जिनके पास कोई भूमि नहीं है। वहीं कुछ परिवार ऐसे हैं जिनके पास कृषि भूमि है। उनके घर में कोई मौत होती है तो खेत पर दफना दिया जाता है। लेकिन, जिनके पास कोई भूमि नहीं है उनके लिए घर में मौत होने के बाद समस्या पैदा हो जाती है।

बताया गया है कि 6 माह पहले ही हालूखेड़ी ग्राम पंचायत झलारा की एक भूमि पर गोस्वामी समाज के एक मृतक को दफनाया गया था। समाजजन चाह रहे थे कि वहां भूमि आवंटन हो जाए। लेकिन, प्रशासन द्वारा नियम व शर्तों के आधार पर भूमि आवंटन रद्द कर दिया गया। बताया जा रहा है कि वर्तमान में बस स्टैंड के पास 10 बीघा भूमि सर्वे क्रमांक 279 पर है। जिस पर गोस्वामी समाज द्वारा 2 बीघा भूमि आवंटन की मांग की जा रही है। काफी समय तक चले हंगामे के बाद आखिर बस स्टेण्ड पर स्थित सरकारी जमीन में से 2 बीघा जमीन गोस्वामी समाज के लिए श्मशान हेतु आवंटित किए जाने की मांग स्वीकार की गई। जिसके बाद मृतक को दफनाया गया।

आज घर-घर विराजेंगे गजानन श्री गणेश

ढोल-ढमाकों व बैंडबाजों के साथ बाबा की होगी अगवानी, अंचल में सजे सैकड़ो पांडाल

यह है गणपति स्थापना मुहूर्त...

शुभ-	प्रात: 7.45 से 9.18 तक
शुक्र होरा-	प्रात: 10.20 से 11.23 तक
अभिजित-	प्रात: 11.23 से 12.25 तक
चर-	दोपहर 12.25 से 1.58 तक
लाभ-	दोपहर 1.58 से 3.31 तक
अमृत-	दोपहर 3.31 से 5.04 तक
लाभ-	शाम 6.37 से 8.04 तक

मंदसौर, 06 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। शहर सहित समुचे अंचल में रिद्धी-सिद्धी के दाता गणेशोत्सव शनिवार से शुरु हो रहा है। ढोल-ढमाकों व बैंड-बाजों के साथ हर कोई शनिवार को गजानन श्री गणेश को प्रतिष्ठानों, घरों व पांडालों में विराजित करेंगे। बच्चें से लेकर बुजुर्गो तक हर कोई इस पर्व को मनाने को लेकर उत्साहित है। गणपति स्थापना के बाद से ही 10 दिनों तक भगवान की पूजा-अर्चना का दौर प्रतिदिन जारी रहेगा। ज्योतिषाचार्य पंडित गिरीश व्यास ने बताया कि इस बार गणेश चतुर्थी के अवसर पर रवि योग सुबह 06 बजकर 02 मिनट से बन रहा है। इस शुभ योग में सभी प्रकार के पाप मिट जाते हैं। वहीं, सर्वार्थ सिद्धि योग दोपहर 12 बजकर 34 मिनट से बनेगा।

डेढ़ सौ से अधिक स्थानों पर विराजेंगे गणेश...

जानकारी अनुसार प्रतिवर्ष की तरह इस बार भी घरों, दुकानों व विभिन्न संस्थानों के साथ ही शहर में करीब 160 से अधिक सार्वजनिक स्थानों पर गणपति स्थापना होगी। इनमें से करीब एक दर्जन से ज्यादा पांडाल आकर्षण का केन्द्र रहेंगे। शहर में कई ऐसे पांडाल है, जिन्होंने अन्य स्थानों से गणेशजी की महंगी प्रतिमाएं बुलवाई है। अंचल में करीब 400 से अधिक स्थानों पर मूर्ति कलाकारों ने अलग-अलग तरह की भगवान गणपति की मूर्तियों से बाजार सजाया। शहर सहित जिलेभर के गणेश मंदिरों में साज-सज्जा के साथ ही अन्य आवश्यक कार्य किया गया है।

भक्तों को लुभा रही गणपति प्रतिमाएं...

शहर में इस बार विभिन्न आकृतियों में गणेशजी की प्रतिमाएं बिकने आई है। शहर के बीपीएल चौराहे से लेकर अस्पताल मार्ग तक, बीपीएल से नई आबादी मार्ग, श्री कोल्ड चौराहा सहित कई स्थानों पर बड़ी संख्या में मूर्तियों की दुकानें सज गई है। कहीं बड़ी प्रतिमाएं लोगों को आकर्षित कर रही है, तो कहीं शेषनाग धारणकर मूसक पर सवार बप्पा भक्तों को लुभा रहे है। बाजार में 50 रुपए से लेकर 50 हजार रुपए तक गणेशजी की छोटी व बड़ी प्रतिमाएं उपलब्ध है। प्रतिमाएं महंगी होने के बावजूद भी लोग अपनी पसंद की मूर्तियों की खरीदारी कर रहे है।

अभिनंदन में चल रहा था मान्यता प्राप्त जुआ घर...!

मालवांचल के अनेक शहरों से आते थे जुआरी, रुपयों के साथ वाहन भी लगा रहे थे दांव पर, कथित रूप से जाहिद के जुआ घर से पकड़ाए एक दर्जन से ज्यादा जुआरी

मंदसौर, 06 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। शहर के अभिनंदन परिक्षेत्र में एक जुआघर लंबे समय से संचालित किया जा रहा था। ऐसा लगता था मानो इस जुआघर को गोवा की भांति मान्यता प्राप्त हो। यहां मालवांचल के लगभग सभी शहरो से जुआरी आकर रूपयो के साथ ही गहने और वाहन भी दांव पर लगाते थे। यह जुआघर कथित रूप से जाहिद खर्चा के मकान में चल रहा था। हालांकि, पुलिस के शहर कोतवाली, वायडी नगर और नई आबादी में पदस्थ 80 प्रतिशत से ज्यादा पुलिस वालो को यह पता था कि जुआघर का संचालन कौन कर रहा है। यह जुआघर एक दो महीने नहीं पिछले 20 साल से अलग-अलग जगह पर संचालित किया जा रहा था और संचालक पुलिस को जेब में रखने का दावा करता था। यह अलग बात है कि वर्तमान पुलिस कप्तान ने कोशिश करी की किसी को कानोकान खबर नहीं हो और जुआघर से सारे जुआरी और नगदी मिल जाए। लेकिन, इमानदार पुलिस कप्तान की यह कोशिश कुछ हद तक ही सफल हो सकी।

गुरुवार देर रात जब पुलिस कप्तान की स्पेशल टीम मौके पर पहुंची तो वहां नकदी तो ठीक वाहन भी दाव पर लगाए जा रहे थे। आगर मालवा सहित कई जगहों के व्हाइट कॉलर जुआरी भी दाव आजमा रहे थे। हालांकि एसपी की स्पेशल टीम की कार्रवाई ने इनके रंग में भंग डाल दी। पुलिस ने रेड मारकर कुल 14 जुआरियों से ढाई लाख रुपए से ज्यादा जप्त किए है। पकड़े गए जुआरियों में अधिकांश शरीफ टाईप के जुआरी है। जो बाजार में व्हाइट कॉलर में घूमते देखे जा सकते हैं। कार्रवाई के दौरान शरीफ टाईप के जुआरियों ने अपने आपको पिछे के दरवाजे से निकालने के लिए हर मुमकीन कोशिश की। इसमें मुख्य सरगना सहित तीन जुआरी सफल हो गए। लेकिन पुलिस ने अधिकांश को दबोच लिया। यहां मंदसौर शहर ही नहीं बल्कि जिले और प्रदेश के अन्य जिलों के जुआरी भी पुलिस के हत्ते चढ़े हैं।

शहर कोतवाली पुलिस ने बताया कि अभिनंदन में सांई मंदिर के पिछे जाहिद खर्चा के मकान में लंबे समय से जुआ घर संचालित होने की खबरें मिल रही थी। इसके बाद पुलिस ने प्लानिंग कर योजनाबद्ध तरीके से गुरुवार रात दबिश दी। पुलिस टीम को देखकर जुआरी इधर-उधर भागने भी लगे, लेकिन खाकी की प्लानिंग से ज्यादा जुआरियो को सफलता नहीं मिली। मौके पर बड़े-बड़े दांव लग रहे थे। यहां एक बाईक भी दांव पर लगी हुई थी। जिसे पुलिस ने जप्त कर लिया है। पुलिस ने यहां से 2 लाख 55 हजार रुपए जप्त किए है। इसके अलावा अन्य संसाधन भी शामिल है। पुलिस ने बताया कि कुल 14 आरोपियो को अभिरक्षा मे लेकर उनसे अधिक संख्या मे घोडीदाना व जुए की राशि कुल 02 लाख 55 हजार रुपये एवं जुए मे दांव पर लगी मोटर साईकिल स्प्लेंडर क्रमांक एम पी 14 जेड ई 4172 को जप्त करने मे सफलता प्राप्त की है। पुलिस ने बताया कि जानकारी मिली है कि जहा जुआघर चल रहा था, वह घर जाहिद खर्चा का है, जिसे भी प्रकरण मे आरोपी बनाया जाकर थाना कोतवाली पर अपराध धारा 3/4 पब्लिक गेंबलिंग एक्ट का पंजीबद्ध ... शेष पेज 4 पर

महिला सूबेदार ने 7वीं मंजिल से लगाई छलांग, मौत

नीमच निवासी थी, मंदसौर में भी रह चुकी पदस्थ

इंदौर, 06 सितंबर गुरु एक्सप्रेस। शहर के पीटीसी अर्थात पुलिस ट्रेनिंग सेंटर कैम्पस में रहने वाली महिला सुबेदार नेहा शर्मा ने शुक्रवार तड़के 5.30 बजे सुसाइड कर लिया। वह सुबह टहलने के लिए निकली और कुछ दूरी पर बनी अफसरो की बिल्डिंग पर जाकर सातवें माले से कूद गई। नेहा किसान आंदोलन के समय मंदसौर में भी पदस्थ रही थी। उस समय कौन बनेगा करोड़पति में भी हिस्सा लिया था। वह समीपस्थ नीमच की रहने वाली थी। महिला के पति टीचर हैं। परिवार ने नौकरी के तनाव में सुसाइड की आशंका जाहिर की है। घटना का एक सीसीटीवी सामने आया है, उसमें महिला बिल्डिंग के मुख्य दरवाजे से एंट्री करते दिख रही है। मौके पर किसी गार्ड ने उसे आते हुए नहीं रोका। सूचना के बाद मौके पर आजाद नगर पुलिस पहुंची। घटना का वास्तविक कारण अभी पता नहीं चला है। महिला सूबेदार तनाव में खुद कूदी या गिर गई, इस जवाब पर पुलिस के

अफसर बच रहे हैं। उनका कहना है कि इस विषय पर जांच जारी है।

एमवाय में हुआ पोस्टमार्टम...

आजाद नगर पुलिस ने बताया पीटीसी में रहने वाली सब इंस्पेक्टर नेहा ओमशरण शर्मा (32) सूबेदार के पद पर थीं। वह पीटीसी के पीछे बनी हुए शिप्रा नाम की बिल्डिंग में रहती थी। परिवार में दो बच्चे है। वह रोजाना की तरह मॉर्निंग वॉक के लिए सुबह करीब 5 बजे घर से पैदल निकली। कुछ दूरी पर ही सात मंजिला बिल्डिंग पुलिस के गजेटेड ऑफिसर के लिए बनी है। नेहा पैदल चलते हुए आई और मेन गेट से इस बिल्डिंग में प्रवेश कर गई। नेहा की शादी 2019 में टीचर ओमशरण से रायपुर में हुई थी। पति ओमशरण ने बताया पत्नी नेहा सुबह उठी और मुझसे कहा कि बच्चों का ध्यान रखना। कुछ देर बाद उसके सुसाइड की सूचना मिल गई। वह सहज और सरल स्वभाव की थी। काफी दिनों से अपनी नौकरी से जुडे कामों को लेकर तनाव में चल रही थी। बता दें कि नेहा की नियुक्ति 2015 में पुलिस विभाग में भर्ती हुई थी। इसके बाद से वह लगातार पीटीसी में पदस्थ रही। परिवार का दावा है कि शादी से पहले से ही नेहा के डिप्रेशन का इलाज चलता रहा। उसकी आठ महीने की बेटी और 4 साल का एक बेटा है। नेहा मूल रूप से नीमच की रहने वाली थी।

मौसम विभाग ने कहा ना, लेकिन दोपहर बाद बरसे बदरा

मंदसौर, 06 सितबर गुरु एक्सप्रेस। मौसम विभाग के ना के बाद भी पिछले तीन दिनों में कहीं-कहीं हल्की बारिश हुई। मौसम विभाग के अनुसार फिलहाल वर्तमान में कोई स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव नहीं होने से अगले तीन चार दिन बारिश का अनुमान नहीं है। लेकिन, कुछ स्थानों पर हल्की बारिश हो सकती है। हालांकि मौसम विभाग के अनुमान को बारिश ने ठेंगा दिखाया। दिनभर बादल छाए रहे। दोपहर में कुछ देर और दोपहर बाद अच्छी बारिश का दौर शुरु हुआ। जिससे सड़को पर पानी जमा हो गया।

शुक्रवार सुबह तक जिले में 29.5 इंच के करीब औसत बारिश दर्ज की गई है। यह जिले की सामान्य औसत बारिश से 3.5 इंच कम है। पिछले वर्ष 6 सितंबर तक 17 इंच औसत बारिश दर्ज की गई थी। इस वर्ष यह आंकड़ा 12.5 इंच ज्यादा है। तीन दिनों से बारिश नही होने से तापमान में हल्का उछाल आया है। हालांकि शुक्रवार को बारिश होने के बाद तापमान में गिरावट आई और उमस से निजात मिली।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक वीएस यादव ने बताया कि अभी प्रदेश से एक मानसून ट्रफ लाइन गुजर रही है। इस कारण 10 सितंबर तक तेज बारिश की संभावना नहीं है। लोकल सिस्टम की वजह से पूर्वी हिस्से के कुछ जिलों में कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश हो रही है। अगले 24 घंटे में यह दौर थमेगा। यादव ने कहा था कि शुक्रवार को सिर्फ डिंडौरी और बालाघाट में तेज बारिश हो सकती है। बाकी जिलों में धूप-छांव और हल्की बारिश ही रहेगी। जिले में शुक्रवार सुबह तक ओवरऑल 29.66 इंच (753.4 मिमि) औसत बारिश दर्ज की गई है। इधर चंबल नदी पर बने गांधी सागर बांध का जलस्तर 1305.36 फीट पहुंच गया है।

विचार-मंथन

सभी पार्टियों पर बनता जा रहा जातिगत जनगणना का दबाव

जातिगत जनगणना के औचित्य पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सकारात्मक रुख से माना जा रहा है कि सरकार इस दिशा में गंभीरता से विचार कर सकती है। हालांकि विपक्षी दलों को इतने भर से संतोष नहीं है। वे चाहते हैं कि संघ और भाजपा इस पर अपना रुख स्पष्ट करें, केवल 'उपदेशात्मक' बात न करें। दरअसल, इस विषय पर फिर से चर्चा इसलिए छिड़ गई है कि केरल के पलक्कड़ में संघ की तीन दिवसीय अखिल भारतीय स्वयंसेवक बैठक के अंतिम दिन उसके अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने प्रेस कांफ्रेन्स कर कहा कि जातिगत जनगणना का उपयोग राजनीतिक या चुनावी उद्देश्य के लिए नहीं किया जाना चाहिए। इसका इस्तेमाल पिछड़ रहे समुदायों और जातियों के कल्याण के लिए होना चाहिए। अभी तक संघ और भाजपा इस मसले पर कुछ भी कहने से बचते आ रहे थे। जातिगत जनगणना का मुद्दा असल में, पिछले कुछ समय से कांग्रेस काफी जोर-शोर से उठा रही है। कर्नाटक चुनाव से लेकर लोकसभा चुनाव तक में उसने इस पर जोर दिया। राहुल गांधी अपने हर भाषण में यह मुद्दा उठाते देखे जाते हैं। इसलिए कुछ लोगों का मानना है कि भाजपा और आरएसएस को लगने लगा है कि इस विषय में लंबे समय तक चुप्पी साधे रहना नुकसानदेह हो सकता है। इसीलिए वे अब जातिगत जनगणना को उचित बताने लगे हैं। आरक्षण का मुद्दा पिछले कुछ वर्षों में काफी संवेदनशील हो चुका है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि ज्यादातर दल इसका इस्तेमाल अपना जनाधार बढ़ाने, आरक्षण से वंचित जातियों को अपने पाले में खींचने के मकसद से ही करते रहे हैं। मगर संवैधानिक बाध्यताओं के चलते राज्य सरकारें पचास फीसद की सीमा पार नहीं कर पातीं। कुछ वर्ष पहले केंद्र सरकार ने भी आरक्षण का दायरा बढ़ा कर उसमें कुछ और जातियों को शामिल किया था। मगर तमाम प्रयोगों के बावजूद आरक्षण को लेकर बहुत सारे समुदायों और जातियों में असंतोष बना हुआ है। ऐसे में सिद्धांत रूप में यह उपाय निकाला गया कि जातिवार जनगणना होनी चाहिए और जिस जाति की जितनी संख्या हो, उसी आधार पर आरक्षण तय किया जाए। इसके लिए संविधान संशोधन हो। सर्वोच्च न्यायालय ने भी पिछले दिनों व्यवस्था दी कि मलाईदार तबके को आरक्षण की व्यवस्था से बाहर रखा जाना चाहिए और जातियों के भीतर उपजातियों का भी वर्गीकरण होना चाहिए। मगर इस व्यवस्था के विरोध में बहुजन समाज पार्टी ने देशव्यापी आंदोलन कर दिया था। कोई भी राजनीतिक दल आरक्षण के प्रावधान का सैद्धांतिक रूप से विरोध नहीं कर सकता। अब जिस तरह कांग्रेस ने जातिगत जनगणना को बड़ा मुद्दा बना दिया है, उसमें हर पार्टी को अपना जनाधार संभालने की चिंता पैदा हो गई है। इसलिए यह कहना कि इसका राजनीतिक इस्तेमाल नहीं होना चाहिए, आदर्श वाक्य जैसा हो सकता है। मगर वास्तव में सभी दल इसके जरिए अपना राजनीतिक हित साधने के प्रयास कर रहे हैं। यह तो सही है कि वंचित समुदायों और जातियों को उनकी संख्या के आधार पर वरीयता देकर ही उनके कल्याण की उम्मीद बन सकती है। पर हमारे देश में जिस तरह की जातिगत जटिलताएं हैं, उन्हें सुलझाना आसान काम नहीं है। अगर संघ और भाजपा सचमुच इसके पक्ष में हैं, तो उन्हें जातिगत जनगणना से जुड़ी गुत्थियों को सुलझाने के लिए समन्वित प्रयास करने होंगे। इसमें दूसरे दलों से भी सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा होगी।

हरियाणा में उत्तर प्रदेश के दलों की दावेदारी...

अजय कुमार

हरियाणा की राजनीति में बीजेपी और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला माना जा रहा है। 2024 के लोकसभा चुनाव ने भी यही स्थिति दर्शाई थी। कांग्रेस और बीजेपी के बीच सीधा संघर्ष होने के कारण हरियाणा के क्षेत्रीय दलों की स्थिति सियासी हाशिए पर चली गई है। हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 में उत्तर प्रदेश की सियासत के प्रभावशाली दल अपनी किस्मत आजमाने के लिए पूरी ताकत के साथ मैदान में उतर रहे हैं। समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, राष्ट्रीय लोकदल और आजाद समाज पार्टी जैसी प्रमुख पार्टियां हरियाणा की सियासत में अपनी पैठ बनाने की कोशिश कर रही हैं। इन दलों ने अपनी चुनावी रणनीति जातीय और सामाजिक समीकरणों पर आधारित बनाई है। जहां बसपा और आजाद समाज पार्टी दलित वोटरों को अपना आधार मानकर चुनावी मैदान में उतरी हैं, वहीं समाजवादी पार्टी यादव-मुस्लिम समीकरण का फायदा उठाने की योजना बना रही है। दूसरी ओर, राष्ट्रीय लोकदल जाट समुदाय के आधार पर हरियाणा में अपनी पहचान को विस्तार देने का प्रयास कर रहा है। इस स्थिति में यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या ये उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय दल हरियाणा की सियासत में प्रभावी हो पाते हैं या सिर्फ वोट कटवा पार्टी बनकर रह जाते हैं। हरियाणा की राजनीति में बीजेपी और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला माना जा रहा है। 2024 के

लोकसभा चुनाव ने भी यही स्थिति दर्शाई थी। कांग्रेस और बीजेपी के बीच सीधा संघर्ष होने के कारण हरियाणा के क्षेत्रीय दलों की स्थिति सियासी हाशिए पर चली गई है। इनेलो और जेजेपी जैसे दलों की सियासी उपस्थिति में काफी कमी आई है। इस परिदृश्य में इन दलों ने दलित आधार वाले दलों के साथ गठबंधन किया है। कांग्रेस बनाम बीजेपी की इस लड़ाई में उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय दल किस तरह का प्रदर्शन कर पाएंगे, यह देखने योग्य होगा। उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी ने सत्ता में चार बार पहुंचकर अपने प्रभाव का प्रदर्शन किया है, लेकिन हरियाणा में उसकी स्थिति हमेशा कमजोर रही है। इस बार मायावती ने हरियाणा में इनेलो के साथ गठबंधन किया है। इसी तरह, आजाद समाज पार्टी के प्रमुख चंद्रशेखर आजाद ने दुष्यंत चौटाला की पार्टी जेजेपी के साथ मिलकर चुनावी मैदान में उतरने का फैसला किया है। समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस के साथ गठबंधन करने की कोशिश की है, जबकि राष्ट्रीय लोकदल ने बीजेपी के साथ मिलकर चुनाव लड़ने की योजना बनाई है। हरियाणा में बसपा और इनेलो ने जाट-दलित समीकरण को ध्यान में रखकर गठबंधन किया है। इस समझौते के तहत बसपा 34 सीटों पर चुनाव लड़ेगी, जबकि बाकी सीटों पर इनेलो अपने प्रत्याशी उतारेगी। 2019 के चुनाव में बसपा हरियाणा में खाता नहीं खोल पाई थी, लेकिन उसे 4.21 प्रतिशत वोट प्राप्त हुए थे। इनेलो ने पिछले चुनाव में 2.44 प्रतिशत वोट प्राप्त किए थे, जबकि इससे पहले यह आंकड़ा 24 प्रतिशत था। 2024 के लोकसभा चुनाव में इनेलो को 1.74 प्रतिशत और बसपा को 1.28 प्रतिशत वोट मिले थे। बसपा की कमान युवा नेता आकाश आनंद के हाथ में है, और पार्टी अनुसूचित जाति के 21 प्रतिशत मतदाताओं के सहारे हरियाणा में अपनी स्थिति मजबूत करना चाहती है। बसपा ने 34 सीटों पर चुनाव लड़ने की योजना बनाई है, जिसमें उसकी सफलता की चुनौती बनी हुई है। 2024 के चुनाव में जाट और दलित वोटों का झुकाव कांग्रेस की ओर दिखा है, जिससे बसपा के लिए हरियाणा में अपनी स्थिति स्थापित करना मुश्किल हो सकता है। अगर बसपा का वोट शेयर लगातार गिरता रहा, तो पार्टी कहीं वोट कटवा पार्टी न बन जाए, यह चिंता बनी रहती है। चंद्रशेखर आजाद ने अपनी आजाद समाज पार्टी का राष्ट्रीय विस्तार करने के लिए हरियाणा में जेजेपी के साथ गठबंधन किया है। जेजेपी, जो इनेलो से टूटकर बनी है, ने 2019 में हरियाणा की सियासत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, लेकिन पिछले पांच वर्षों में उसे अपने सियासी अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा है। चंद्रशेखर ने जेजेपी के साथ मिलकर चुनाव लड़ने का निर्णय लिया है। हरियाणा की 90 सीटों में से जेजेपी 70 और आजाद समाज पार्टी 20 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। इस गठबंधन से जेजेपी को अधिक लाभ की उम्मीद है। चंद्रशेखर ने यूपी में दलितों के बीच अपनी पहचान बनाई है, लेकिन हरियाणा में उनकी लोकप्रियता सीमित है। कांग्रेस सांसद कुमारी शैलजा और उदयभान जैसे दलित चेहरे राज्य में प्रभावी रहे हैं। ऐसे में चंद्रशेखर के लिए जेजेपी के साथ मिलकर हरियाणा में सफलता प्राप्त करना एक चुनौती हो सकती है। समाजवादी पार्टी ने 2024 में उत्तर प्रदेश की 80 सीटों में से 37 सीटें जीतकर अपनी ताकत साबित की है। अखिलेश यादव ने हरियाणा विधानसभा चुनाव में अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया है। समाजवादी पार्टी कांग्रेस के साथ गठबंधन करके चुनावी मैदान में उतरना चाहती है, लेकिन अभी तक दोनों दलों के बीच कोई ठोस समझौता नहीं हुआ है। कांग्रेस के नेता विधानसभा चुनाव में किसी अन्य दल के साथ गठबंधन करने के लिए तैयार नहीं हैं। सपा ने यह भी तय किया है कि अगर कांग्रेस उसे सीट नहीं देती है, तो वह अकेले चुनाव लड़ने की योजना बना रही है। 2019 में हरियाणा विधानसभा चुनाव में सपा का प्रदर्शन निराशाजनक रहा था, जहां वह चार सीटों पर लड़ी थी और सभी की जमानतें जब्त हो गई थीं। फिर भी, सपा ने चुनाव लड़ने के लिए अपनी तैयारी शुरू कर दी है और यादव और मुस्लिम प्रभाव वाली सीटों पर ध्यान केंद्रित किया है। पार्टी की रणनीति यह है कि चाहे सीट मिले या न मिले, लेकिन उसकी पहचान बने और उसे हरियाणा में अपनी स्थिति स्थापित करने में मदद मिले। यह देखना होगा कि सपा इस बार कितना प्रभाव डाल पाती है। राष्ट्रीय लोकदल केंद्र में एनडीए गठबंधन का हिस्सा है और इसके प्रमुख जयंत चौधरी मोदी सरकार की कैबिनेट में हैं। हरियाणा में जाट वोटरों की ताकत को देखते हुए आरएलडी ने विधानसभा चुनाव लड़ने का फैसला किया है।

जल संचयन के लिए पहले घरों में बनाए जाते थे कुंड

मुकेश पोपली

यह तो तय है कि हमारे जीवन में पानी की आवश्यकता जन्म से लेकर मृत्यु तक बनी रहती है। पानी की उपलब्धता के लिए बह रही नदियां, लहराते सागर, झर-झर बहते झरने, गहरे नाले सभी प्रकृति की देन हैं। दूसरी ओर, नहरें, कुएं और बावड़ियां मानव निर्मित हैं। एक समय था जब हमारे देश में कुएं और बावड़ियां पर्याप्त मात्रा में थे और इनमें बरसाती पानी जमा होता था। इसी तरह उन इलाकों में जहां बारिश और पानी की कमी होती थी, घरों में कुंड बनाए जाते थे। घर की छत पर जमा हो रहे बारिश के पानी को इस कुंड तक ले जाने के लिए नालियां बनाई जाती थीं और इस पानी को पीने के काम में लिया जाता था। यहां यह भी बिंदु महत्त्व रखता है कि यह पानी हमें नुकसान नहीं पहुंचाता था। आज घरों में बरसात के पानी का संचय करने वाले कुंड नाममात्र के हैं। अब कुएं नहीं हैं, बावड़ियां नहीं हैं। जो हैं, उनमें काई जमा है। वह पानी पीने के लायक तो नहीं है और उसका उपयोग नहाने-धोने के लिए भी नहीं किया जा सकता है। जानवर भी उस पानी के नजदीक नहीं जाना चाहते, क्योंकि वह सड़ांध मार रहा है। दरअसल, पानी की प्रकृति निर्मल होती है और चंचलता भी उसमें कूट-कूट कर भरी होती है। आज प्रकृति निर्मित नदियों को हमने कचरा घर मान लिया है।नदियों के किनारों पर बसे शहरों के कल-कारखानों ने अपने उत्पादों से निकलने वाले तमाम कचरे को हमेशा पानी में बहाया है और लाख सख्ती के बावजूद नदियां आज भी प्रदूषित हो रही हैं। अब न तो नदियों में निर्मलता है और न ही मन को मोहने वाली चंचलता। अब पानी गाहे-बगाहे अपना रौद्र रूप दिखाता है। इस कारण से नदियों के किनारे बसे शहरों में रहने वालों की प्रकृति भी दिनोंदिन कठोर होती जा रही है। देश में पानी को लेकर झगड़े आम बात हो गई है। यहां तक कहा जाने लगा है कि आने वाले वक्त में अगर विश्व युद्ध हुआ तो उसका मुख्य कारण पानी होगा। पानी के मामले में जिस तरह के अभाव की स्थिति, छीना-झपटी, पानी के लगातार कारोबार बनते जाने की हालत बनती जा रही है, भूजल सूखने की खबरें आ रही हैं, उससे ऐसा लगता है कि पानी के मसले पर टकराव एक स्वाभाविक स्थिति होगी। पानी तो सबको चाहिए और वह मिल भी रहा है, लेकिन उसकी शुद्धता और उसमें पोषक तत्व की मौजूदगी की परवाह किसी को नहीं है। हम प्रकृति की निर्मम हत्या करके स्वयं को बलिष्ठ समझने लगे हैं। नदियों के रास्ते में बने घने जंगलों को हमने उजाड़ना शुरू कर दिया है। विकास के बहाने से हमने नदियों का पानी स्वयं से ही दूर कर लिया है। हमारी निर्दयता देखकर नदियां अपना रास्ता बदल रही हैं। नदियों में जब भी तेज बहाव होता है, तब पानी गांव, खेतों और घरों में घुस जाता है। शहरों की सड़कों में पानी की निकासी के पर्याप्त प्रबंध न होने से पानी पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं रह जाता है। बाद में जब बाढ़ का पानी उतरता है तो पीछे रह जाते हैं छोटे-बड़े पत्थर, मटमैला, काला और गहरा गाद, सूखे-गीले कांटों का जमावड़ा और साथ ही ठहरे हुए पानी से जन्म लेने वाली बीमारियां। हमने पानी को केवल उपभोग की वस्तु मानना प्रारंभ कर दिया है। यह जानते हुए भी कि पानी हमारे जीवन का आधार है, हम उसकी प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। एक जमाना था जब पानी की संस्कृति हमारे दिलों और घरों में मौजूद थी। हमारी प्राचीन सभ्यता की ओर मुड़ कर देखें तो हम पाते हैं कि हमारी संस्कृति को पानी ने ही पाला-पोसा है। पहाड़ों से शुरू होने वाला कलकल पानी पतली और अलग-अलग धाराओं के रूप में जंगलों के ऊबड़-खाबड़ रास्तों से निकलते हुए नदियों के रूप में बहता हुआ जल सागर में समाता देखकर हमें सुकून मिलता था। यह पानी ही बताता है कि निरंतर चलते रहना ही जीवन है। समुद्र का विशाल रूप हमें सीख देता है कि हमारा जीवन दुख-सुख, आशा-निराशा, उतार-चढ़ाव का अद्भुत संगम है। बहते पानी को रोकने के लिए किए जाने वाले षड्यंत्रों की ही तरह ढेर सारे लोग हमारे जीवन की सुचारु गति में बाधाएं उत्पन्न करते हैं। ईर्ष्या करते हैं। हमारा अस्तित्व समाप्त करने का प्रयास करते हैं। हमें पनपने देना नहीं चाहते। साथ ही इसके विपरीत कुछ लोग जो संख्या में भले ही कम हों, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हमें सहयोग करते हैं। वे हर पल हमारा साथ निभाते हैं। दुआएं देते हैं। हौसला प्रदान करते हैं। हमारी उन्नति के लिए प्रार्थना करते हैं। पानी के साथ बहकर आ रही प्रत्येक वस्तु को भी वह अपने तल में पनाह दे देता है। वह चाहता है कि हम भी मिलने वाले स्नेह, हर्ष और घृणा को अपने हृदय में बसा कर रख लें तो बेहतर है। अन्यथा जो हमने बाहर छोड़ दिया।

मॉडर्न टेक्नोलॉजी से क्या हल हो जाएंगे सारे मसले?

द लॉग हिस्ट्री ऑफ द फ्यूचर नाम की किताब निकोल कोबी (ह्द्र्म्नद्य्द्र घ्म्श्नुद्रद्र) ने लिखी है, जिसमें आधुनिक तकनीक से जुड़ी कई दिलचस्प जानकारियां दी गई हैं। मसलन, इसमें ड्राइवरलेस कारों के बारे में बताया गया है कि यह तकनीक कहां तक पहुंची है और कुछ साल पहले तक इसे लेकर जो दावे किए जा रहे थे, वे अभी तक क्यों सही साबित नहीं हुए हैं। किताब में लिखा है कि पहली क्यूसी ऑटोनोमाउस यानी आधी-ड्राइवरलेस कार कोई 30 बरस पहले वजूद में आ गई थी, जिसे एक जर्मन अकेडमिक ने बनाया था। यह वाकया 1994 का है। लेकिन इस सिलसिले में सबसे ज्यादा सुर्खियां अल्फाबेट की रोबोटैक्सीज को मिली थीं। गूगल की मालिक कंपनी का यह प्रोजेक्ट अभी तक कामयाब नहीं हो पाया है और यह अमेरिका के कुछ शहरों तक ही सीमित है। दरअसल, आधुनिक तकनीक ने कई ऐसी चीजों को हकीकत की शक्ल दी है, जो पहले साइंस फिक्शन के रूप में हमारे सामने आईं। निकोल के मुताबिक, हर पीढ़ी में इस तरह की चीजें तैयार करने का जुनून होता है। इसमें कुछ चीजों में कामयाबी मिलती है तो कई चीजों का ख्वाब पूरा नहीं हो पाता। साइंस फिक्शन की जो चीजें हकीकत बनीं, उन्हीं में से एक मोबाइल फोन है। ड्रोन टेक्नॉलजी का भी इस्तेमाल कई क्षेत्रों में बढ़ रहा है। ऐसी ही तकनीकों में उड़ने वाली कारें, सोचने-समझने वाले रोबॉट भी शामिल हैं। निकोल का कहना है कि अक्सर ऐसी तकनीक को लेकर लोगों के मन में जो आकांक्षाएं होती हैं, वे पूरी नहीं हो पातीं। साथ ही, इन्हें डिवेलप करने में भी काफी वक्त लगता है। किताब में इलॉन मस्क की ड्राइवरलेस टेस्ला का भी जिक्र है। इसके बारे में लेखक ने लिखा है कि इस कार को अभी भी ड्राइवर की निगरानी की जरूरत पड़ती है और शायद आने वाले कई वर्षों तक यह सिलसिला जारी रह सकता है। आज सबसे अधिक चर्चा आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) टेक्नॉलजी को लेकर हो रही है। इसके बारे में भी इस किताब में लिखा गया है। इसमें बताया गया है कि सबसे पहले इस टर्म का इस्तेमाल 1956 में हुआ था। पिछले कुछ वर्षों में इंसानी समाज ने जेनरेटिव एआई की दिशा में अच्छी तरक्की की है। ओपन एआई के बॉट चेट जीपीटी ने जेनरेटिव एआई शब्द को आम बोलचाल का हिस्सा बना दिया। माइक्रोसॉफ्ट ने इस कंपनी में बड़ा निवेश किया है तो गूगल भी जेनरेटिव एआई को लेकर बेहद सक्रिय है। जेनरेटिव एआई में जिस तरह के चिप का इस्तेमाल होता है, उसमें एनविडिया कंपनी को बहुत बढ़त हासिल है। इसी वजह से इस कंपनी के शेयरों की कीमत रेकॉर्ड लेवल पर पहुंच गई है। निकोल का कहना है कि इन सबके बावजूद लार्ज लैंग्वेज मॉडल्स कैसे खुद सोचने वाली मशीन में बदलेंगे, इसकी तस्वीर साफ नहीं है। इन्हीं बातों का जिक्र करते हुए निकोल बताती हैं कि अगर तकनीक का इतिहास देखें तो पता चलता है कि अक्सर नई टेक्नॉलजी को लेकर जो हो-हल्ला मचता है, उसमें यह बात छिपी रह जाती है कि इंसानों पर उस तकनीक की किस कदर निर्भरता है। ब्रिटेन में एरिक नाम का रोबॉट 1928 में दिखाया गया था, तब से 100 बरस होने को आ रहे हैं, इसके बावजूद रोबॉटिक्स में दुनिया ने आज तक बहुत तरक्की नहीं की है। निकोल ने इस किताब में एक बड़ा सवाल भी उठाया है। सवाल यह कि इंसानों को ऐसी तकनीक की जरूरत है, यह कौन से लोग तय करते हैं। इसके जवाब में वह लिखती हैं कि ज्यादातर ऐसी पहल उद्यमियों की ओर से हुई है। ऐसे उद्यमियों की ओर से जिन्हें लगता है कि टेक्नॉलजी इंसानों की सारी समस्याओं को हल कर सकती है, लेकिन अक्सर उनकी सोच में कॉमन सेंस का अभाव होता है।

आज का राशिफल

मेष

वृषभ

मिथुन

कर्क

सिंह

कन्या

तुला

वृश्चिक

धनु

मकर

कुंभ

मीन

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5349

					9			6
					3	8	5	1
	6	2		1	5			
		7					6	
	2	1	9	7	6	3	8	
	3					1		
			4	5		9	7	
2	5	8	6					
4			3					

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5348

1	6	7	5	2	4	9	3	8
2	3	9	1	7	8	6	5	4
8	5	4	3	9	6	2	7	1
6	9	8	7	4	2	3	1	5
7	2	3	6	1	5	4	8	9
5	4	1	8	3	9	7	6	2
3	1	2	4	8	7	5	9	6
9	7	6	2	5	1	8	4	3
4	8	5	9	6	3	1	2	7

वर्ग पहेली 5349

संकेतः बाएं से दाएं

1. यह हमारे देश का राष्ट्रीय नारा है (6)
7. एक होने का भाव, अभिसार, आलिंगन (3)
8. चुंगी कर, भाड़ा, किराया (4)
9. जल का शब्द का अपभ्रंश (2)
10. फूलों की घनी गुंथी हुई छोटी माला (3)
11. वैराग्य, विरक्ति, संन्यास ग्रहण, दिलीप कुमार की दोहरी भूमिका वाली फिल्म (1967)(3)
12. मृदुल मंद समीर, ठंडी और धीमी हवा (3)
14. साधु संन्यासी के रहने का स्थान (2)
15. रसूल, ईशदूत, पैगंबर (2)
16. असफल, अयोग्य, अनुत्तीर्ण (3)
18. शास्त्रीय संगीत में गांधार स्वर (1)
20. ये तमिल तथा हिंदी फिल्मों के निर्देशक हैं जिन्हें पद्मश्री से नवाजा जा चुका है (5)
22. यह ओडिशा का सबसे बड़ा शहर है जो हिन्दुक नदी के किनारे स्थित है (3)
24. नदी किनारे का वह पक्का स्थान जहां लोग पानी भरते व स्नान करते हैं (2)

ऊपर से नीचे

1. मजदूर (3)
2. सामंजस्य न होना, सामंजस्यहीन होना (6)
3. जंगल, कानन, अरण्य (2)
4. सुपुत्र, अश्विनी कुमार (3)
5. यह ईरान की राजधानी है (4)
6. फूलअदाम, फूल जैसा कोमल और मृदुल सुकुमार और सुगंधित शरीर वाला (4)
10. सूर्य का एक नाम यह भी है (5)
12. जल में उत्पन्न वस्तु (3)
13. शोख, सुल्ती, मुस्कराहट (2)
17. हसरत, आरजू, तमन्ना, आकांक्षा (3)
19. पद्य की रचना वाला (2)
21. सखी का पुत्र, आम नाम (2)
22. मेष से संबंधित एक नक्षत्र (2)

वर्ग पहेली 5348 का हल

क	ला	म	म	हे	श्व	री	
र्म		त	ला		ज	ज	ना
	रू	प	या		न	न	द
	प	श		ज			गा
व	ही		ब	ल	वा	ड	
ज	न	प	द	ज		ल	ना
ना	ता		री			ही	रा
		लू			फो	जी	

जिले में 3 लाख 51 हजार सदस्य बनाने का लक्ष्य लेकर हम कर रहे है कार्य-अटोलिया

✻ प्रत्येक बूथ पर 200 नए सदस्य बनाने को लेकर बूथ बूथ पर जा रहे है कार्यकर्ता, ✻8800002024 पर मिस्ड कॉल कर भाजपा का सदस्य बन पार्टी की विचारधारा से जुडे आमजन, ✻ संगठन पर्व सदस्यता महाअभियान को लेकर जिला मुख्यालय मंदसौर पर प्रेस वार्ता संपन्न

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, प्रदेश भाजपा संगठन प्रभारी महेंद्र सिंह एंव सह प्रभारी सतीश उपाध्याय, प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा, प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, प्रदेश सदस्यता अभियान प्रभारी एंव विधायक भगवानदास सबनानी के निर्देशानुसार आज जिला मुख्यालय मंदसौर पर भाजपा जिलाध्यक्ष नानालाल अटोलिया ने सांसद सुधीर गुप्ता, राज्यसभा सांसद बंशीलाल गुर्जर की गरिमामय उपस्थिति में सदस्यता अभियान को लेकर प्रेसवार्ता को संबोधित किया। इस प्रेस वार्ता में सदस्यता अभियान के जिला प्रभारी एंव भाजपा जिला महामंत्री राजेश दीक्षित, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी निलेश जैन एंव सह मीडिया प्रभारी विनय धनगर सहित नगर के गणमान्य पत्रकार बंधु उपस्थित रहे।

प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष नानालाल अटोलिया ने कहा की प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 सितंबर को नई दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी के हाथों पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर देशभर में संगठन पर्व का शुभारंभ किया है। प्रधानमंत्री जी के सदस्य बनने के साथ देशभर में संगठन पर्व का शुभारंभ हो गया है। मध्यप्रदेश में 3 सितंबर को भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने प्रदेश भाजपा कार्यालय में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं म.प्र. मंत्रिमंडल के सदस्यों को पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराकर प्रदेश में संगठन पर्व का शुभारंभ किया है। इस संगठन पर्व का मुख्य उद्देष्य, देश में 18 करोड सदस्यो की सदस्यता का नवीनीकरण करने के साथ 10 करोड से भी अधिक नये लोगों को भारतीय जनता पार्टी का सदस्य बनाना है। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा घर-घर पहुंचकर सदस्यता अभियान को साकार करेगी। मध्यप्रदेश में 1.50 करोड नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा गया है। सन 2014 से 2019 तक लगभग 18 करोड लोगों ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की है। जब माननीय श्री अमित शाह जी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे, उस समय वर्ष 2014-15 में लगभग 5 से 6 महीनों तक यह सदस्यता अभियान चलाया गया था, तब पूरे देश में लगभग 11 करोड लोगों ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की थी और भाजपा दुनिया की सबसे बडी राजनीतिक पार्टी बन गई है। इसी तरह वर्ष 2019 में भी कुछ समय के लिए यह सदस्यता प्रकिया प्रारंभ की गई थी, जिसमें लगभग 7 करोड लोगों ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की थी। भारतीय जनता पार्टी इस सदस्यता प्रक्रिया को संगठन पर्व कहती है, क्योंकि भाजपा के लिए राष्ट्र प्रथम है। उमंग और उत्साह के साथ यह पर्व शुरू हो गया है, जिसे साकार रूप पार्टी के एक-एक कार्यकर्ता को करना है। इस संगठन पर्व हेतु प्रदेश स्तरीय कार्यशाला आयोजित हो चुकी हैं एवं मार्गदर्शन दिया जा चुका है। संगठन महापर्व का प्रथम चरण 1 सितंबर से हो चुका है और 24 सितंबर 2024 तक चलेगा। जबकि दूसरा चरण 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2024 तक रहेगा। सक्रिय सदस्यता अभियान 16 से 31 अक्टूबर 2024 तक चलेगा तथा प्राथमिक एवं सक्रिय सदस्यता रजिस्टर करने की तिथि 1 नवम्वर से 10 नवम्बर 2024 होगी। भाजपा का यह अभियान चार आयामों पर आगे बढ़ेगा। एक आयाम है मिस्ड कॉल 8800002024 जिसके माध्यम से लोग पार्टी से जुड़ सकेंगे। दूसरा आयाम है क्यूआर कोड स्मार्टफोन का उपयोग करने वाले लोग क्यू आर कोड के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी के सदस्य बन सकते हैं। नमो एप के माध्यम से भी सदस्यता ग्रहण की जा सकती है। भारतीय जनता पार्टी की वेबसाइट के माध्यम से भी सदस्यता ग्रहण कर सकता है। इस अभियान का मूल उद्देश्य भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा का विस्तार करना है।यह भाजपा की लोकतांत्रिक प्रक्रिया ही है जो पार्टी को अन्य लगभग 1500 राजनीतिक दलों से अलग खड़ा करती है। 1984 में जब भाजपा केवल 2 सीटें जीतकर आई थी, तब पार्टी का उपहास किया जाता था, लेकिन विचारधारा, कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम, संघर्ष और सदस्यता अभियान के कारण भाजपा आज आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में लगातार तीसरी बार सत्ता में आई है। जब जनसंघ विपक्ष बनकर उभरा, उस समय जिन दो राजनीतिक पार्टियों का अस्तित्व था कांग्रेस और कम्युनिस्ट दोनों पार्टियों की विचारधारा, विदेशी विचारधारा पर थी। केवल भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा ही इस माटी की उपज थी।

सदस्यता अभियान संगठन पर्व के रूप में चलाया जाएगा

राजेश भंडारी

नीमच, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। विश्व की सबसे बड़ी पार्टी भारतीय जनता पार्टी का सदस्यता अभियान सदस्यता पर्व के रूप में चलाया जाएगा जिसका शुभारंभ 2 सितंबर को दिल्ली में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पहला सदस्य बना कर किया है सदस्यता अभियान के तहत जिले के प्रत्येक पोलिंग बूथ तक यह अभियान चलेगा नीमच जिले में ढाई लाख सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा गया है उक्त बात भाजपा जिला कार्यालय तपोभूमि पर आयोजित पत्रकार वार्ता में भाजपा जिला अध्यक्ष पवन पाटीदार ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कही इस अवसर पर नीमच विधायक दिलीप सिंह परिहार नीमच नगर पालिका अध्यक्ष स्वाति चोपड़ा, कार्यालय मंत्री विनोद नागदा सहित अन्य भाजपा जन उपस्थित थे।

स्व स्पर्शी होगा अभियान–भाजपा जिला अध्यक्ष पवन पाटीदार ने कहा कि भाजपा के सदस्यताअभियान में भाजपा केपदाधिकारी ,जनप्रतिनिधि से लगाकर, पोलिंग स्तर के कार्यकर्ता तक जुटेंगे साथ ही भाजपा के विभिन्न मोर्चा प्रकोष्ठों के माध्यम से भी समाज के हर वर्ग को भाजपा से जोड़ने के लिए स्व स्पर्शी सदस्यता अभियान चलाया जाएगा।

दो चरणों में चलेगा अभियान–भाजपा का सदस्य अभियान 1 सितंबर से प्रारंभ हो चुका है जो 24 सितंबर तक चलेगा अभियान का दूसरा चरण 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर तक चलेगा इसके पश्चात सक्रिय सदस्यता अभियान 16 से 31 अक्टूबर तक चलेगा तथा प्राथमिक एवं सक्रिय सदस्यता रजिस्टर करने की तिथि 1 से 10 नवंबर तक रहेगी भाजपा का यह अभियान आगे बढ़ेगा इसके पश्चात पहले नगर, उसके पश्चात मंडल व फिर जिले के चुनाव होंगे उसके पश्चात प्रदेश के चुनाव होंगे।

ऐसे बन सकते हैं सदस्य–पत्रकारों से चर्चा करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष पवन पाटीदार ने बताया कि मिस्ड कॉल से ,क्यूआर कोड से, नमोएप के माध्यम से, वह भारतीय जनता पार्टी की वेबसाइट के माध्यम से सदस्य बन सकते हैं। इस अभियान का मूल उद्देश्य भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा का विस्तार करना है यह पार्टी की लोकतांत्रिक प्रक्रिया है जो देश के अन्य राजनीतिक दलों से अलग है।

60000 से अधिक सदस्य बन चुके हैं–जिला अध्यक्ष ने बताया कि अभी तक नीमच जिले में भाजपा के 60000 से अधिक सदस्य बन चुके हैं और जिला संभाग में दूसरे स्थान पर है शीघ्र ही हम संभाग व प्रदेश में प्रथम स्थान पर पहुंच जाएंगे भाजपा की सदस्यता के लिए कार्यकर्ताओं में उत्साह है जिससे हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाएंगे।

जिले में अब तक 753.4 मिमी औसत वर्षा दर्ज

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। जिले में इस वर्ष अबतक औसतन 753.4 मि.मी. वर्षा दर्ज की गयी है। जबकि पिछले 24 घन्टों में मंदसौर जिले में 3.7 मिमी वास्तविक वर्षा दर्ज की गई है। पिछले 24 घन्टों में मंदसौर में 1.0 मि.मी., सीतामऊमें 5.8 मि.मी. सुवासरा में 2.0 मि.मी., गरोठ में 3.0 मि.मी., भानपुरा में 3.6 मि.मी., मल्हारगढ़ मे 3.0 मि.मी., धुधंडका में 0 मि.मी., शामगढ में 8.4 मि.मी., संजीत में 0 मि.मी., कयामपुर में 6.0 मि.मी. एवं भावगढ़ में 8.0 मि.मी वास्तविक वर्षा दर्ज की गई है। विगत 1 जून से अबतक वर्षामापक केन्द्र मंदसौर में 664.0 मि.मी., सीतामऊ में 788.2 मि.मी. सुवासरा में 858.2 मि.मी., गरोठ में 761.1 मि.मी., भानपुरा में 696.8 मि.मी., मल्हारगढ़ मे 641.0 मि.मी., धुधंडका में 714.0 मि.मी., शामगढ़ में 1061.4 मि.मी., संजीत में 608.0 मि.मी., कयामपुर में 688.6 मि.मी. एवं भावगढ़ में 806.7 वास्तविक वर्षा दर्ज की गई है। गांधीसागर बांध का जल स्तर अब तक 1306.36 फीट है।

जिला पुरातत्व, पर्यटन व संस्कृति परिषद की बैठक 10 को

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत मंदसौर द्वारा बताया गया कि जिला पुरातत्व, पर्यटन व संस्कृति परिषद (कार्यकारणी) की बैठक आयोजित की गई है। बैठक 10 सितंबर 2024 को दोपहर 3 बजे सुशासन भवन मंदसौर में कलेक्टर श्रीमती अदिती गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की जाएगी।

पोरवाल दम्पत्ति मोटरसाइकिल से भारत यात्रा पर निकले

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। मन्दसौर निवासी जगदीश पोरवाल अपनी पत्नी डालर पोरवाल के साथ मोटरसाइकिल से भारत भ्रमण पर निकले है। इस दौरान पोरवाल दम्पत्ति चारधाम एवं 12 ज्योतिर्लिंग के दर्शन करेंगे। यह मोटर साइकिल यात्रा भारत में लगभग 16 राज्यों में 80 जगहों पर जायेगी। 23 अगस्त से मंदसौर से प्रारंभ हुई यह यात्रा लगभग 70 दिनों में 18 हजार कि.मी. का सफर तय करके पुन: मंदसौर पहुंचेगी। यह जानकारी देते हुए जगदीश पोरवाल ने बताया कि अभी तक 15 दिनों की यात्रा में पावागढ़, डाकोरजी, चोरीला, गिरनारजी, सोमनाथ, द्वारकाजी, अम्बाजी, नाथद्वारा, चारभुजाजी, ओम बन्ना, पुष्करजी, खाटू श्याम, मेहंदीपुर बालाजी, रणथम्बोर, आंवलाखेड़ा, मथुरा, सोरनजी, शुक्रताल, हरिद्वार, यमनोत्री एवं गंगोत्री की सकुशल यात्रा कर चुके है। अभी तक लगभग 5000 कि.मी. का सफल पूर्ण कर चुके है। यात्रा का उद्देश्य पक्षी बचाओ आंदोलन को पूरे भारत में जन-जन तक पहुंचाना है। यात्रा के दौरान जगह-जगह अभियान के स्टीकर चिपकाते है एवं लोगों को अभियान से जुड़ने के लिये संदेश देते है।

दिनांक 07 सितम्बर 2024
अपनी कुण्डली स्वयं देखे- ज्योतिषाचार्य पंडित यशवंत जोशी के साथ
कुंभ राशि के लोग...

✻ कुंभ राशि के लोग क्रोध में अति कठोर और सामान्य अवस्था में शीघ्र भावुक होने वाले तथा प्रबल बुद्धि के धनी होते हैं। इन्हे अपना मान और गर्व सबसे उपर रखना होता हैं संघर्ष के साथ ही इनके जीवन की शुरुआत होती हैं, प्रोढ़ावस्था तक इन्हे संघर्ष को अपना साथी बनाकर ही सफलता मिलती हैं।
जय दुर्गा ज्योतिष सेवा संस्थान एवं अनुष्ठान केंद्र मंदसौर
7024667840,8085381720

कलेक्टर ने किया बालक छात्रावास का निरीक्षण

नीमच, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। जिले में आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित सभी छात्रावासों में स्वीकृत सीटों की संख्या के बराबर विद्यार्थियों को प्रवेश दिलाना सुनिश्चित करें। किसी भी छात्रावास में कोई भी सीट खाली ना रहे। यह निर्देश कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा ने शुक्रवार को ग्राम चीताखेडा में सीनियर बालक छात्रावास के निरीक्षण दौरान जिला संयोजक आदिम जाति कल्याण विभाग को दिए। निरीक्षण दौरान कलेक्टर ने छात्रावास में स्वीकृत सीटे, वर्तमान में निवासरत विद्यार्थी एवं रिक्त सीटों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने अब तक 50 के विरूद्ध 15 विद्यार्थी निवासरत पाये जाने पर अप्रसन्नता जताते हुए शेष सभी सीटों पर विद्यार्थियों का प्रवेश सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। अधीक्षक को निर्देश दिए, कि वे छात्रावास परिसर में गार्डन भी विकसित करे।

राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय का बच्चे करें अधिक से अधिक उपयोग

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। बच्चों और किशोरों के लिये राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय और राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी की पहल केन्द्रीय स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने की है। ई-पुस्तकालय का उद्देश्य विभिन्न भौगोलिक भाषाओं शैलियों और शैक्षिक स्तरों पर बच्चों और किशोरों को उच्च गुणवत्ता वाली गैर शैक्षणिक पुस्तकों तक मुफ्त पहुँच प्रदान करना है। राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी का यह एप्लीकेशन, एंड्रॉइड और आईओएस प्लेटफार्म पर उपलब्ध हैं। राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय एप्लिकेशन प्रत्येक आयु समूह (3-8, 8-11, 11-14 और 14-18) में उपलब्ध हैं। इस प्लेटफार्म पर कहानियाँ, जीवनियाँ, क्लासिक वैज्ञानिक कहानियाँ और उपन्यास आदि के साथ वर्गीकृत हजारों पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसमें डिजिटल रीडर्स क्लब, इन्ट्रेक्टिव सेशन और मॉनीट्रिंग्स रीडर्स का प्रावधान है। इस एप पर एक हजार से अधिक गैर-शैक्षणिक ई-पुस्तकें नए शीर्षकों के साथ नियमित रूप से जोड़ी जा रही हैं। राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय 22 भाषाओं और अंग्रेजी में पढ़ने की सामग्री की एक विविध श्रृंखला प्रदान करता है।

कलेक्टर ने किया जीरन तहसील कार्यालय का आकस्मिक निरीक्षण

नीमच, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा ने शुक्रवार को अपने जीरन प्रवास दौरान तहसील कार्यालय जीरन का आकस्मिक निरीक्षण किया और राजस्व प्रकरणों का जायजा लिया। उन्होंने नायब तहसीलदार एवं तहसीलदार न्यायालय में नामांतरण प्रकरणों एवं अन्य राजस्व प्रकरणों की नस्तियों का अवलोकन किया। कलेक्टर ने आवेदक अरनिया बोराना के बाबुलाल को जमीन का कब्जा दिलाने और रास्ता विवाद का निराकरण कर, रास्ता दिलवाने के निर्देश भी तहसीलदार को दिए। उन्होने नक्शा तरमीम एवं ईकेवायसी की प्रगति की हल्कावार जानकारी ली और प्रगति बढ़ाने के निर्देश भी दिए। नगरपरिषद की पूर्व कर्मचारी इंद्रा एवं पूजा ने कलेक्टर से नगरपरिषद द्वारा किए गए कार्य का मानदेय भुगतान नहीं करने की शिकायत पर निर्देश दिए, कि सीएमओ उक्त् दोनों पूर्व कर्मचारियों को नियमानुसार लंबित मानदेय का भुगतान करें।

प्रचार वाहनों को प्रधान जिला न्यायाधीश ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं मप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री कपिल मेहता द्वारा जिले में नेशनल लोक अदालत के प्रचार-प्रसार वाहनों को हरी झंडी दिखाकर भ्रमण के लिये रवाना किया। नेशनल लोक अदालत का आयोजन 14 सितंबर को किया जाएगा। जिसके लिये प्रचार वाहन जिले के विभिन्न शहरी एवं ग्रामीण इलाकों में जाकर लोक अदालत का प्रचार-प्रसार माइक व लाउडस्पीकर के माध्यम से करेगा।

गणेश चतुर्थी पर विशेष...

बैलगाड़ी आगे नहीं बड़ी और नाम पड़ गया गणपति चौक

श्री द्विमुखी चिंताहरण गणपति की अदभूत प्रतिमा के दर्शन करने दूर-दूर से आते भक्त

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। प्राचीन एवं ऐतिहासिक धार्मिक नगरी दशपुर की पहचान देश की एक मात्र अद्वितीय भव्य श्री द्विमुखी भगवान गणेशजी की प्रतिमा के कारण भी है। गणपति चौक जनकुपूरा स्थित यह दुर्लभ प्रतिमा पाषाणयुगीन है, सात फिट उँची गणपति की खड़ी मुद्रा वाली इस अप्रतिम नयनाभिराम प्रतिमा का स्वरुप अत्यंत ही सुंदर व कलात्मक है। प्रतिमा का आगे का भाग पंचसुण्डी रुप में और पीछे का स्वरुप श्रेष्ठी (सेठ)की मुद्रा को प्रदर्शित करता है। मस्तक पर सेठ के समान पगड़ी व शरीर पर बण्डी पहनी आकृति है, आगे व पीछे दोनों मुखों के पूजा के विधान भी अलग-अलग है। इस अनोखी प्रतिमा के दर्शन के लिये दूर दूर से अनेको दर्शनार्थी आते है।

श्री द्विमुखी चिंताहरण गणपति के नाम से विख्यात इस प्रतिमा का ज्ञात इतिहास लगभग 95 वर्ष पुराना है। हालांकि प्रतिमा का प्रस्तर आभा मंडल प्राचीन शिल्प का उत्कृष्टव सर्वोत्कृष्टस्वरुप प्रदर्शित करता है, इस लिहाज से प्रतिमा का इतिहास अर्वाचीन भी हो सकता है। प्रतिमा का प्राकटय स्थल नाहर सय्यद दरगाह की पहाड़ी पर स्थित तलाई है। स्थानीय निवासी मूलचंद स्वर्णकार को स्वप्न में इस स्थान पर प्रतिमा के होने का आभास हुआ, यह कोई किवदंती नही वरन् स्पष्टतथ्य है। स्वप्न की पुष्टिके लिये मूलचंद स्वर्णकार ने जब उस स्थान पर जाकर देखा तो पत्थरों में दबी यह स्वप्न दृष्ट प्रतिमा सामने प्रत्यक्ष दिखाई दी। मूलचंद स्वर्णकार को सवंत 1986 में आषाढ़ सुदी पंचमी दिनांक 22 जून 1929 को प्रतिमा को प्रतिष्ठापित करने का प्रेरणात्मक आदेश प्राप्त हुआ। उन्होने आषाढ़ सुदी 10 विक्रम संवत 1986 को शास्त्रीय विधि विधान के साथ इस अद्वितीय प्रतिमा को पत्थरों के बीच से निकालकर धुमधाम से बैलगाड़ी में विराजित कर आगे बढ़ाया। तत्कालीन समय के साथी व्यक्तियों के कथनानुसार द्विमुखी गणेशजी की इस प्रतिमा को नरसिंहपुरा क्षेत्र में किसी उचित स्थान पर प्रतिष्ठापित करने हेतु बैलगाड़ी से ले जाया जा रहा था। चूंकि उस समय नरसिंहपुरा जाने के लिये जनकुपुरा से मदारपुरा होकर जाना सुगम मार्ग था इसलिये बैलगाड़ी को जनकुपुरा से ले जाने का निश्चय किया गया। बैलगाडी जनकुपुरा में इस स्थान पर रुक गई जहां द्विमुखी चिंताहरण गणेशजी का मंदिर है।पहले इस स्थान को प्रचलित नाम इलाजी चौक के नाम से जाना जाता था जो अब गणपति चौक के नाम से प्रचलन में आ गया है। इसी मंदिर के कारण यह नाम प्रचलित हो गया चूंकि प्रतिमा को नरसिंहपुरा ले जाने का निश्चय किया गया था इसलिये बैलगाड़ी का आगे बढ़ाने का खूब प्रयास किया लेकिन लाख कोशिश के बादभी बैलगाड़ी एक इंच भी आगे नही बढ़ी। भगवान गणेशजीकी इच्छा को सर्वोपरि मानकर धर्मालुजनों द्वारा इसी स्थान पर दूसरे दिन यानि एकादशी को प्रतिमा की विधिपूर्वक स्थापना की गई तब से यह स्थान गणपति चौक के नाम से जाना जाता है।

इस द्विमुखी प्रतिमा के दोनों और के मुख अलग-अलग रुप व भाव मयी मुद्राएं प्रकट करते है। आगे के मुख में पाँच सुण्ड है पीछे के मुख में एक सुण्ड व सिर पर पगड़ी धारण किया विशेष श्रृंगार है जो भगवान श्री गणेशजी को श्रेष्ठिधर सेठ के रुप में अभिव्यक्त करता है। कालांतर में जनकुपुरा क्षेत्र के महानुभावों की अगुवाई व नगरवासियों के सहयोग से मंदिर को व्यवस्थित व स्थानोंचित भव्य रुप दिया गया, वर्तमान में यह मंदिर नगर ही नही समूचे अंचल के धर्मालुजनों की आस्था का केन्द्र बन चुका है। प्रति बुधवार यहां सायंकाल महाआरती होती है। मंदिर में अन्य देवी देवता की प्रतिमाएं भी स्थापित है। गर्भगृह में विशाल नीम का पेड़ था, जो गिर गया है। धर्मशास्त्र के उल्लेख के अनुसार प्रतिमा को पंचतत्वों से संबंधित माना गया है। आगे के मुख जिस पर पांच सुण्ड है ये विघ्नहर्ता गणेशजी कहलाते है। पांच सुण्ड की दिशा बायी और है, पीछे के मुख की सुण्ड दाहिनी दिशा में है जिसे संकट मोचन गणेशजी कहा जाता है। मान्यता है कि श्री द्विमुखी गणपति मंदिर में आने वाले दर्शनार्थियों की मनोकामनाएं पूर्ण होती है। ऐसी विलक्षण प्रतिमा के दर्शन करने दूर-दूर से दर्शनार्थी आते है व अपनी मन की कामनाएं पूरी होने की कामना करते है। गणेशोत्सव के दसो दिन यहां विशेष पूजा आराधना प्रतिदिन महाआरती होती है व विविध धार्मिक आयोजन भी होते है। वर्ष भर प्रति बुधवार रात्रि 7.30 बजे महाआरती का आयोजन भी होता है।

✻ नरेन्द्र अग्रवाल

झांकियों व अखाड़ों के साथ नगर में एक साथ निकलेंगे 51 वेवाण

14 सितम्बर को होगा भव्य आयोजन, तैयारियों को लेकर बैठक सम्पन्न

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। महावीर फतेह करे सेवा संस्था (बालाजी ग्रुप) मंदसौर द्वारा नगर के समाज प्रमुखों, वेवाण प्रमुख एवं सामाजिक संगठनों के साथ नगरपालिका सभागृह में बैठक आयोजित की। जिसमें सभी ने सर्वानुमति से निर्णय लिया कि विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी नगर में निकलने वाले वेवाण एक साथ निकाले जायेंगे जिससे हिन्दू संस्कृति से अधिक से अधिक जुडे और सामाजिक समरसता का भाव बना रहे। बैठक को संबोधित करते हुए बालाजी ग्रुप के अध्यक्ष लोकेन्द्र मंगल बैरागी ने कहा कि प्रतिवर्ष मंदसौर नगर में डोल ग्यारस पर अपने-अपने मंदिरों व स्थलों से वेवाण निकाले जाते है लेकिन इनमें संबंधित वेवाण प्रमुख या समाज प्रमुख ही रहते है एक दूसरे के वेवाण में सम्मिलित नहीं हो पाते है। जिसको लेकर पिछले वर्ष नगर में वेवाण भव्य चल समारोह नगर में निकला था विगत वर्ष के भांति इस वर्ष भी वेवाण साथ एक साथ निकाले जायेंगे।

बैठक में निर्णय लिया कि 14 सितम्बर डोल ग्यारस पर गांधी चौराहा स्थित विश्वपति शिवालय पर दोप. 2 बजे सभी वेवाण एकत्र होंगे तथा आकर्षक झांकियों एवं करतब दिखाते अखाडों के साथ सामुहिक रूप से वेवाण नगर में निकलेंगे तथा पशुपतिनाथ मंदिर पहुंचेंगे। अभी तक करीब 51 वेवाण की स्वीकृति प्राप्त हुई यह संख्या बढ सकती है। आयोजन को भव्य रूप देने हेतु बैठक में डोल ग्यारस उत्सव समिति का गठन भी जल्द ही किया जाएगा। बैठक में विनय दुबेला ने चल समारोह की योजना प्रस्तुत की। प्रहलाद शर्मा पिंटू ने पूजन की कार्ययोजना प्रस्तुत की। इस अवसर पर पं. शिवकरण प्रधान, गुरुचरण बग्गा, अनिल कियावत, सूरजमल गर्ग चाचाजी, राजेन्द्र कुमार चाष्ठ, दिलीप राजोदिया, शेषनारायण माली, दिलीप शर्मा, गौरव अग्रवाल, रमेशचन्द्र सैनी, कन्हैयालाल सोनगरा, बंशीलाल टांक, महेश (बंकट) सोमानी, आनन्द भाटी, भूपेश भाटी, नरेन्द्र बंधवार, रूपनारायण मोदी, सुनील जैन महाबली, निरंजन भारद्वाज, रविन्द्र पाण्डे, संदीप नामदेव, दिलीप भांड, रणजीत उस्ताद, श्याम पहलवान, गोपाल पसारी, बाबू सूर्यवंशी, जितेन्द्र गेहलोद, बंकट अप्पा, प्रदीप सोनी, लखन कहार, महावीर मोर्य, अजय मोर्य, पंकज चौहान, रूपेश कहार, पंकज चौहान, राजा कहार, कुणाल चनाल, नरेश परमार, प्रदीप पाटीदार, रितिक डुंगरवार, जीतू डगवार, लोकेश ठाकुर, विष्णु कुणावत, शुभम कुणावत, जितेन्द्र मोर्य, विनोद चौहान, गोविन्द कहार, लखन कहार, किशन चौहान, लोकेश चौहान, दयाल सिगलीकर, राहुल छपरी, अमित मोर्य, पवन रेकवार, सतीश मोर्य, लखन भैरवे, मुकेश राठौर, रवि रैकवार, अभिषेक कोठारी, हेमन्त मोर्य, जीवन कहार, गणेश कहार, मुकेश शर्मा, शांतिलाल विश्वकर्मा, मांगीलाल शर्मा, सुनील भदानिया, अशोक शर्मा, कमलेश नागदा, श्याम सोनी सहित बड़ी संख्या में समाज प्रमुख उपस्थित थे। संचालन दिलीप दुबे ने किया व आभार पत्रकार सुरेश भावसार ने माना।

नगरी में जल प्रदाय परियोजना का कार्य प्रगति पर

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। नगरीय विकास एवं आवास विभाग के उपक्रम मध्यप्रदेश अर्बन डेवलपमेंट कम्पनी द्वारा एशियन डेवलपमेंट बैंक के सहयोग से मंदसौर के नगरी में समूह जल प्रदाय परियोजना पर कार्य किया जा रहा है। हर घर नल के माध्यम से शुद्ध जल पहुँचाने के लिए नगरी के लिए 1.15 एमएलडी क्षमता के जलशोधन संयंत्र निर्मित किए जा रहे है। वहीं प्रत्येक घर को जल प्रदाय नेटवर्क से जोड़ने के लिए नगरी में 15.042 किलोमीटर का डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क बिछाया जाना है। पाइप लाइन बिछाने के उपरांत सड़कों की मरम्मत का कार्य लगभग पूर्ण कर लिया गया है। गौरतलब है कि इस कार्य को मध्यप्रदेश अर्बन डेवलपमेंट कम्पनी की उज्जैन इकाई क्रियांवित कर रही है। पीआईयू स्तर पर व परियोजना प्रबंधन इकाई द्वारा समय समय पर निर्माण कार्य की समीक्षा भी की जा रही है।

भारत विकास परिषद द्वारा शिक्षक दिवस मनाया

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के अवसर पर गुरुवार 5 सितंबर को भारत विकास परिषद शाखा मंदसौर द्वारा उत्साह केसाथ शिक्षक दिवस मनाया गया। इस मौके पर परिषद परिवार के 11 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इस दौरान प्रांतीय महासचिव घनश्याम पोरवाल ने कहा की शिक्षक अपने छात्रों के लिए हमेशा मौजूद रहें, मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करें। छात्रों के लिए, ज्ञान का उत्सुक खोजी होना महत्वपूर्ण है,क्योंकि यह उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है, जिससे उनकी सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है।

परिषद परिवार के शिक्षकगण जिसमें डॉ. क्षितिज पुरोहित, श्री दीपक सैनी, डॉ. आशीष अग्रवाल, डॉ. नवीन चौधरी, श्री जगदीश काला, श्री आशीष बंसल, श्री रामचंद्र कच्छावा, श्रीमती ममता विष्णु सौलंकी, श्रीमती रेशमा अजय शर्मा, श्रीमती प्रीति मनोज जैन, श्रीमती सीमा शर्मा आदि का सम्मान गया। शिक्षक दिवस के अवसर पर भारत विकास परिषद परिवार में चार नये सदस्यों ने सदस्यता ग्रहण की। जिसमें श्री सुशील मीनल माहेश्वरी, श्री आशीष बंसल, श्री सुरेन्द्र गुप्ता, श्रीमती सीमा शर्मा है। सभी नवीन सदस्यों का स्वागत परिषद के दुपट्टे व परिचय फोल्डर प्रदान कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन देवेन्द्र मरच्या ने किया एवं इस अवसर पर अध्यक्ष अजय शर्मा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुभाष गुप्ता, सेवा प्रमुख गौरव रत्नावत, शाखा पालक नरेन्द्रकुमार त्रिवेदी, विष्णु सौलंकी, आदि सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत मंत मिडिया प्रभारी दिलीपजी सेठिया ने आभार माना।

कलेक्टर के निर्देश पर सिंगोली के मुख्य बाजार से अतिक्रमण हटाया

नीमच, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टयर श्री हिमांशु चंद्रा ने निर्देशानुसार पर सिंगोली मे मुख्या बाजार से प्रशासन द्वारा अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही की गई है। तहसीलदार श्री राजेश सोनी, सिंगोली थाना प्रभारी श्री बी.एल. भाबर, रतनगढ़ थाना प्रभारी, डिकेंन चौकी प्रभारी, नगर परिषद प्रभारी सीएमओ श्री अंकित मांझी सहित पुलिस, राजस्व और नगर परिषद के अमले ने सिंगोली शहर के मुख्यश बाजारों, सड़कों, चौराहे पर से अतिक्रमण कर वाहन खड़े कर मार्ग अवरूद्ध करने पर अतिक्रमण हटाकर सड़कों को क्लीसयर करवाया गया है। यह जानकारी तहसीलदार सिंगोली श्री राजेश सोनी ने दी। उल्लेखनीय है, कि गत दिवस सिंगोली के भ्रमण के दौरान कलेक्टर द्वारा तहसीलदार, सी.एम.ओ. और थाना प्रभारी को सड़क मुख्य मार्ग से अतिक्रमण हटवाने के निर्देश दिए गए थे।

मंदसौर मंडी भाव

उपज	आवक बोरी में	न्यूनतम	अधिकतम
मक्का	31	2500	2681
उडद	2	4201	7051
सोयाबीन	3600	4101	4801
गैहु	2724	2611	3201
चना	201	5401	7322
मसुर	157	5401	6051
धनिया	313	5100	6581
लहसुन	9200	10100	26900
मैथी	690	5150	6000
अलसी	1100	5000	5940
सरसो	289	5101	5741
तारामीरा	2	4640	4640
इसबगोल	79	9910	12401
प्याज	2100	1100	3700
कलोंजी	16	11000	18000
डॉलर	29	9506	12680
तिल्ली	34	9601	12500
मटरसुखी	4	6370	7500
असालीया	35	9851	10921

पुलिस ने 18 मोटरसाइकिल जप्त की, 4 गिरफ्तार, 1 फरार

मनासा, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। पुलिस अधीक्षक अंकित जायसवाल द्वारा अपराध समीक्षा के बैठकों के दौरान जिले में समस्त अनुविभागीय पुलिस अधिकारी एवं थाना प्रभारी एवं चौकी प्रभारी को जिले में लगातार हो रही वाहन चोरी एवं नकबजनी आदि संपत्ति संबंधित अपराधों पर अंकुश लगाने एवं वाहन चोरी एवं नकबजनी आदि संपत्ति संबंधित अपराधों की तत्काल पतारसी कर प्रभावी कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया।

एसपी नीमच श्री अंकित जायसवाल के निर्देशन में एवं एडिशनल एसपी महोदय नीमच श्री नवल सिंह सिसोदिया एवं अनुविभागीय अधिकारी पुलिस मनासा श्री विमलेश उइके के मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी मनासा निरीक्षक शिवकुमार यादव के कुशल

नेतृत्व में मनासा पुलिस टीम द्वारा अंतराज्यिय वाहन चोर गिरोह का पर्दाफाश करते हुए अलग-अलग स्थान से चुराई गई 18 मोटरसाइकिलों को जप्त किया जाकर वाहन चोर गिरोह को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की जिले में लगातार हो रही चोरी पर अंकुश लगाने एवं अपराधों को संज्ञान में लेकर अभियान के तहत संपत्ति संबंधित अपराधों में पतारसी करने हेतु समस्त अनुविभागीय अधिकारी एवं थाना प्रभारी को अपना सूचना तंत्र मजबूत करने वह अपराधियों की तलाश कर घटनाओं के तह तक पहुंचकर घटनाओं में की गई संपत्ति की बरामदगी की वह अपराधियों को गिरफ्तार करने हेतु आदेशित किया गया था। उपरोक्त संपत्ति संबंधित अपराधों के घटनास्थल की आधार पर शहर व मुख्य मार्गों पर ऑपरेशन नीमच आई के तहत लगाए गए सीसीटीवी कैमरे की मदद से आरोपियों के फुटेज आदि लिए गए तथा घटना में संभावित स्थानों पर सूचना तंत्र लगाकर सिविल में पुलिस की मॉनीटरिंग कर आरोपियों की तलाश की गई पुलिस के द्वारा अपनी व्यावसायिक दक्षता तकनीकी साक्ष की मदद से कस्बा मनासा में हो रही वाहन चोरी की घटनाओं में आरोपियों की पहचान स्थापित कर आरोपियों से पूछताछ की गई पूछताछ में आरोपियों ने नीमच सरवानिया मनासा मंदसौर पिपलिया मंडी व रतलाम तथा पडोसी राज्य राजस्थान के निंबाहेडा बेगु जोगणिया माता चित्तौडगढ आदि स्थानों पर वाहन चोरी की वारदात को कबूला तथा आरोपियों के कब्जे से 18 मोटर साइकिले जप्त कर चार आरोपियों को गिरफ्तार किया वह दो अन्य फरार आरोपियों की तलाश जारी कार्रवाई के दौरान पुलिस ने 18 बाइक जप्त की है।

गिरफ्तार आरोपी– ❊ विशाल पिता महेश नायक उम्र 21 साल निवासी कचोली थाना मनासा ❊ प्रदीप पिता कैलाश कुमावत उम्र 20 साल निवासी उम्रागंज मनासा ❊ राहुल पिता बंसीलाल परिहार मालवीय उम्र 29 साल भील गली जूना साथ मनासा ❊ भूपेंद्र पिता नंदकिशोर रावत उम्र 23 साल निवासी जूनासाठ मनासा।

दीपक गुर्जर के नेतृत्व में भारी बारिश में किसानों ने किया...

सोयाबीन के भाव बढ़ाने को लेकर प्रदर्शन

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर में सोयाबीन के भाव ?6000 प्रति क्विंटल किए जाने की मांग को लेकर किसानों ने भारी बारिश में भी सैकडो की संख्या में पहुंचकर गैर राजनीतिक रूप से बडा प्रदर्शन किया। किसान नेता और जिला पंचायत सदस्य दीपक सिंह गुर्जर के नेतृत्व में किसानो की वाहन रैली गांधी चौराहा से शुरू हुई जो शहर के प्रमुख मार्ग से होती हुई सुशासन भवन पहुंची और प्रशासनिक अधिकारियों के समक्ष महामहिम राज्यपाल के नाम ज्ञापन दिया। जिसमे किसानों ने मांग रखी की सोयाबीन ?6000रु प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य किया जावे, क्योंकि पूरे देश में जितनी सोयाबीन उगाई जाती है उसका 55% से अधिक तो सिर्फ मध्यप्रदेश के किसानों द्वारा उगाई जाती है।बावजूद इसके केंद्र सरकार ने दो दिन पूर्व तीन राज्यों तेलंगना कर्नाटक और महाराष्ट्र में एमएसपी पर खरीदी की घोषणा कर दी है जबकि इसका पहला हक मध्यप्रदेश का बनता हैसाथ ही रोजडो की समस्या, बिजली बिलों में बेतहाशा वृद्धि, फसल बीमा, डोडाचूरा के फर्जी प्रकरण जैसे मामले को लेकर किसानों ने महामहिम राज्यपाल के नाम ज्ञापन दिया। इस अवसर पर किसान नेता डीपी धाकड, श्यामलाल जोकचंद महेंद्र सिंह गुर्जर, केदार सिरोही,राहुल व्यास, रिंकेश डबकरा,भानुप्रताप सिंह,जगन्नाथ पटेल, अर्जुन गुर्जर, गेंदालाल धनगर, श्याम जाट,अशफाक मंसूरी,अब्बास हुसैन सुरेश धनगर, मोहन धाकड,संजय वर्मा, मनोहर सोनी, सत्यनारायण पाटीदार, मोहन पाटीदार, रघुराज सिंह लोंगनी, प्रकाश राठौर, राजेश मालवीय, शीतल सिंह बोडाना, मोहन खारोल, बालमुकुंद कुमावत,मोहनलाल कुमावत, कमल गुर्जर, याकूब मंसूरी, सुरेश टेलर, सत्यनारायण गुर्जर, श्यामलाल अटोलिया आदि सैकडों की संख्या में किसान उपस्थित रहे।ज्ञापन एसडीएम शिवलाल शाक्य द्वारा लिया गया।

एसडीएम, तहसीलदार स्वास्थ्य संबंधित संस्थाओं की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा ले-कलेक्टर

सीएम हेल्पलाइन शिकायतों का प्राथमिकता के साथ समाधान किया जाए

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्रीमती अदिती गर्ग की अध्यक्षता में सभी राजस्व अधिकारियों की बैठक सुशासन भवन स्थित सभागृह में आयोजित की गई। बैठक के दौरान कलेक्टर ने सभी राजस्व अधिकारियों को राजस्व महा अभियान 2.0 में बेहतर कार्य करने पर प्रशंसा व्यक्त की और शुभकामनाएं प्रदान की। कलेक्टर ने निर्देश देते हुए कहा कि सभी अधिकारी राजस्व अभियान की तरह हमेशा कार्य करें। सीएम हेल्पलाइन के अंतर्गत जो शिकायत प्राप्त हो रही है, उनका प्राथमिकता के साथ निराकरण करें। सीएम हेल्पलाइन की शिकायतें जिस दिन प्राप्त होती हैं, कोशिश करे की शिकायत का उसी दिन समाधान हो जाए। बैठक के दौरान अपर कलेक्टर श्रीमती एकता जायसवाल, सभी एसडीएम, सभी तहसीलदार मौजूद थे।

राजस्व महा अभियान में जिन पटवारियों ने कोई कार्य नहीं किया। उनके विरुद्ध एसडीएम उचित कार्यवाही करें। ऐसे शेष किसान जिनकी कृषि भूमि की ई केवाईसी शेष है, उनकी ई केवाईसी जल्द करें। नक्शा प्राप्त होने के पश्चात प्रकाशन समय पर होना चाहिए। दुर्घटना होने के बाद आरबीसी 6(4) के तहत प्रकरण बनाकर त्वरित राहत प्रदान करें। सभी एसडीएम और तहसीलदार अपने-अपने क्षेत्र की स्वास्थ्य संबंधित संस्थाओं की सुरक्षा व्यवस्था को देखें। इसके साथ ही सभी सीएससी एवं पीएससी का निरीक्षण भी करें। प्रत्येक सीएससी में सुरक्षा व्यवस्था के लिए चार गार्ड होने चाहिए। सडकों पर घूम रहे आवारा मवेशियों को गौशाला तक पहुंचाए। इसके साथ ही जिले में सडक सुरक्षा अभियान लगातार चल रहा है। इसके अंतर्गत स्कूल वाहनों का फिटनेस चेक करें तथा हेलमेट लगवाने के लिए लोगों को जागरूक करें।

थर्ड पार्टी से जांच कराए बिना ही सरकारी अस्पतालों को बांट रहे दवाइयां

भोपाल, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। सरकारी अस्पतालों के लिए शासन की दवा खरीदी और वितरण की व्यवस्था में ही गोलमाल है। थर्ड पार्टी से बिना जांच कराए ही दवाइयों का उपयोग शुरू कर दिया जाता है। दवा आपूर्ति करने वाली कंपनी द्वारा दी गई लैब की गुणवत्ता रिपोर्ट को ही सही मानकर दवाओं का उपयोग करने के निर्देश हैं।

ऐसे में अमानक दवा मिलने के बाद उपयोग पर प्रतिबंध लगाने से पूर्व ही एक तिहाई से अधिक दवाएं खप जाती हैं। कारण, सैंपल भेजने से लेकर रिपोर्ट आने तक में तीन से चार माह लग जाते हैं। दवा आपूर्ति के बाद निर्धारित तापमान में भंडारण नहीं करने से भी गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। कई दवा स्टोर का तापमान गर्मी में 35 डिग्री से भी ऊपर रहता है जो कि 25 से 30 के बीच होना चाहिए। इस वर्ष अब तक 13 दवाएं अमानक मिल चुकी हैं, बीते वर्ष पांच मिली थीं।

एनएबीएल मान्यता प्राप्त लैब की गुणवत्ता रिपोर्ट लगाना कंपनियों के लिए अनिवार्य– दरअसल, दवा आपूर्ति करने वाली कंपनी के लिए प्रत्येक बैच की दवा आपूर्ति के साथ नेशनल एक्रीडिटेशन बोर्ड फार लेबोरेट्रीज (एनएबीएल) मान्यता प्राप्त लैब की गुणवत्ता जांच रिपोर्ट लगाने की शर्त है। इस कारण सभी कंपनियां इन लैब से सैंपल जांच कराकर दवा के साथ ओके रिपोर्ट भी भेजती हैं। इसके बाद इन्हीं में से स्टोर कीपर या ड्रग इंस्पेक्टर द्वारा जब सैंपल लेकर जांच के लिए भेजा जाता है तो कुछ अमानक मिल जाते हैं। यह दवाएं मेडिकल कालेजों से संबद्ध अस्पतालों से लेकर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों तक में उपयोग की जाती हैं। रोगियों से दवाओं का कोई शुल्क नहीं लिया जाता।

हर साल प्रदेश में 400 करोड़ की दवाओं की खरीदारी– प्रदेश में प्रतिवर्ष लगभग 400 करोड़ की दवाएं खरीदी जाती हैं। कुल बजट में से 80 प्रतिशत से दवा खरीदी मध्य प्रदेश पब्लिक हेल्थ सप्लाई कारपोरेशन और अति आवश्यक होने पर 20 प्रतिशत बजट से सीएमएचओ या सिविल सर्जन को दवा खरीदी का अधिकार है। थर्ड पार्टी से जांच के बिना ही दवाओं के उपयोग को लेकर विभाग के अधिकारियों का तर्क है कि जांच रिपोर्ट की प्रतीक्षा करने पर तीन से चार महीने चले जाएंगे, इसीलिए कंपनी से एनएबीएल लैब की रिपोर्ट मांगी जाती है। केंद्रीय या प्रदेश की लैब में अमानक मिलीं दवाएं इस वर्ष जो 13 दवाएं अमानक पाई गई हैं उनमें तीन केंद्रीय औषधि परीक्षण प्रयोगशाला (सीडीटीएल) कोलकाता में दो, सीडीटीएल हैदराबाद में एक, सीडीटीएल इंदौर में एक और बाकी मप्र शासन की भोपाल स्थित औषधि प्रयोगशाला में अमानक निकली हैं।

डॉ. आशीष खिमेसरा डी.लिट उपाधि से विभूषित

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन द्वारा डॉ. आशीष खिमेसरा को डॉक्टर ऑफ लेटर्स की उपाधि से विभूषित किया है। यह एक उच्च डॉक्टरेट डिग्री है जिसे साहित्य, कला, या मानविकी में उत्कृष्टयोगदान के लिए दिया जाता है। डॉ. खिमेसरा को यह डिग्री औषधि निर्माण उद्योग में गुणवत्ता प्रबंधन पर शोध प्रस्तुत करने पर प्रदान की गई है। डॉ. खिमेसरा ने अपने शोध में स्पष्टकिया है कि मानव कल्याण के लिये औषधि निर्माण की गुणवत्ता में कोई समझौता नहीं करना चाहिए। उन्होंने यह शोध कार्य विक्रम विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष एवं आचार्य डॉ. सत्येन्द्र किशोर मिश्रा के परामर्श से पूर्ण किया। उल्लेखनीय है कि डॉ. खिमेसरा विगत 25 वर्षों से औषधि के क्षेत्र में कार्य कर रहे है। डी. लिट की उपाधि से विभूषित होने पर डॉ. खिमेसरा को सांसद सुधीर गुप्ता, सकल जैन समाज के अध्यक्ष दिलीप लोढा, विकास भण्डारी, अजीत लोढा, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. घनश्याम बटवाल, ब्रजेश जोशी, नरेन्द्र अग्रवाल, राहुल सोनी, राजेश मानव, आशुतोष नवाल सहित स्नेहीजनों व इष्ट मित्रों आदि ने बधाई व शुभकामनाएं दी है।

मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज अध्यक्ष अजय सोनी ने जिला कार्यकारिणी घोषित की

जयप्रकाश सोनी महामंत्री, राजेश सोनी ऐरावाला कोषाध्यक्ष बनाये गये

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। श्री मेढ क्षत्रिय स्वर्णकार

समाज के जिलाध्यक्ष एवं म.प्र. स्वर्णकला बोर्ड के सदस्य अजय सोनी कॉलोनाईजर ने समाज के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कारूलाल सोनी एवं म.प्र. स्वर्णकार समाज के प्रदेश अध्यक्ष श्री मुकेश सोनी पचोर की सहमति से मेढ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज की जिला कार्यकारिणी की घोषणा की है।

नई जिला कार्यकारिणी में वरिष्ठ संरक्षक कारूलाल सोनी अफजलपुर वाला, नागेश्वर सोनी नीलम मसाला, पृथ्वीराज सोनी सफाई बंद, संरक्षक अर्जुन डाबर, मनोहरलाल सोनी जावदवाला, अर्जुन सोनी शामगढ, संयोजक भूपेन्द्र सोनी प्रतापगढ वाला, कमलेश सोनी लाला, मांगीलाल सोनी आकोदडा वाला, हेमन्त सोनी आनन्द ज्वेलर्स, सत्यनारायण सोनी सतु काका सीतामऊ, उपाध्यक्ष अशोक सोनी मेलखेडा वाला, विक्रम सोनी सम्राट, मनोहरलाल सोनी दलौदा, उमेश सोनी सुवासरा, प्रहलाद सोनी पिपलियामंडी, महामंत्री जयप्रकाश सोनी नारायणगढ वाला, कोषाध्यक्ष राजेश सोनी ऐरावाला, मंत्री महेश सोनी एरावाला, मनीष सोनी लाला, दीपक सोनी दिवानजी, हितेश सोनी सम्राट, राजा सोनी बाजीगर, डॉ. मुकेश सोनी, प्रदीप सोनी, प्रवीण सोनी सुवासरा, नीतिन राजकुमार सोनी, संगठन मंत्री अजय चौधरी, मुकेश सोनी मनोकामना, राजा सोनी, प्रकाश अडानिया, अरविन्द सोनी मल्हारगढ, संजय ओमजी सोनी सीतामऊ, विनोद सोनी नारायणगढ वाला, जितेन्द्र सोनी धुंधडका वाला, सहमंत्री प्रकाश सोनी जीरनवाला, हरिश सोनी अपना, किशोर सोनी गरोठ, कमलेश सोनी इन्द्राणी, शेलेन्द्र सोनी पिपलिया, संजय सोनी गरोठ, अमृत सोनी संजीत, विजयराज सोनी, मीडिया प्रभारी विनोद सोनी एसएसएन, प्रचार मंत्री अंतिम सोनी पिंटू, सह संगठन मंत्री सत्यनारायण सोनी पेंटर, गोपाल सोनी बरखेडा वाला, गोविन्द सोनी पूनम ज्वेलरी, कमल सोनी पिपलिया, महेश सोनी सुवासरा, विधि सलाहकार विश्वनाथ सोनी एडवोकेट बनाये गये। जिला कार्यकारिणी सदस्य महेश सम्राट, शंकरलाल सोनी रांका मार्केट, चंचल सोनी, राजेश जयपुरवाला, प्रदीप अफजलपुरवाला, घनश्याम भीलवाडा वाला, कुशाल सोनी, अल्केश सोनी, मनीष सोनी, ओम सोनी स्वास्तिक ज्वेलर्स, कुशाल सोनी, विजय सोनी, राजकुमार सोनी, राजेन्द्र सोनी रामपुरावाला, जगदीश सोनी पीडब्ल्यूडी, विशाल सोनी भोला, हेमन्त सोनी मरेंडिया बनाये गये। समाज के दलौदा तहसील अध्यक्ष घनश्याम सोनी, मल्हारगढ तहसील अध्यक्ष मुकेश सोनी पिपलिया, सीतामऊतहसील अध्यक्ष अरूण सोनी सरकार, शामगढ तहसील अध्यक्ष दिनेश बद्रीलालजी सोनी, गरोठ तहसील अध्यक्ष सत्यनारायण सोनी सोनी ज्वेलर्स, भानपुरा तहसील अध्यक्ष हरिप्रकाश सोनी को नियुक्त किया गया। सभी तहसील अध्यक्षों को जिला कार्यकारिणी में विशेष आमंत्रित सदस्य बनाया गया।

नौ स्मार्ट मीटर से छेड़छाड़ की गई, विद्युत मंडल ने बनाया पंचनामा

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर शहर विद्युत वितरण केंद्र के एई पियूष पंवार ने बताया कि विगत दो दिवस में मंदसौर शहर विद्युत वितरण केंद्र के अंतर्गत स्मार्ट मीटर सेल से चयनित 22 विद्युत कनेक्शन चेक किये गये। उक्त कनेक्शनों में से 9 विद्युत कनेक्शन स्मार्ट मीटर टेम्पर पाए गए जिसमें प्राथमिक जांच में यह पाया गया कि इनसे छेडछाड किया की गई है।

उक्त मीटरो को विधिवत पंचनामा बनाकर मीटर जप्त किये गए। उक्त सभी टेम्पर मीटर की जांच एलटीएमटी लैब में करवाई जायेंगी जहां से जांच रिपोर्ट आने पर और स्मार्ट मीटर से छेडछाड की पुष्टि होने पर आगामी तीन दिनों में संबंधित उपभोक्ताओं को बिल जारी किए जायेंगे। यदि उपभोक्ता बिल जमा नहीं करता है तो उनका विद्युत कनेक्शन विच्छेद कर दिया जायेंगा और उसके बाद भी बिल जमा नहीं होता है तो उपभोक्ता के विरूद्ध कानूनी कार्यवाही की जायेंगी।

पुण्यों का बखान नहीं करना चाहिए ऐसा करने से इसका क्षय होता है-स्वामी सरस्वती

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। श्री केशव सत्संग भवन खानपुरा मंदसौर पर दिव्य चातुर्मास पूज्यपाद 1008 स्वामी आनन्दस्वरूपानंदजी सरस्वती ऋषिकेश के सानिध्य में चल रहा है। स्वामी जी द्वारा प्रतिदिन प्रात: 8.30 से 10 बजे तक श्रीमद् भागवद् महापुराण के एकादश स्कन्द का का वाचन किया जा रहा है।

शुक्रवार को धर्मसभा में स्वामी श्री आनन्द स्वरूपानंदजी सरस्वती ने कहा कि हमारे जीवन में पुण्य का विशेष महत्व है। सांसारिक जीवन में तो कोई भी वस्तु खरीदना है तो आप पैसे से खरीद सकते हो लेकिन मृत्यु लोक में जब कर्मो का हिसाब होता है वहां रूपया पैसा काम नही आता वहां तो पुण्य काम आते है। पुण्य दिखाई नहीं देता लेकिन अत्यंत प्रभावशाली होता है। पुण्य को गुप्त रखना चाहिए इसका बखान नहीं करना चाहिए बार - बार बताने से पुण्यों का क्षय होता है। इसलिए हमें अपने पुण्य का कथन नहीं करना चाहिए कि मैंने ये किया मैने उसे ये किया। पुण्य को गुप्त रखों और इसे ईश्वर पर छोड दो। आपने बताया कि घर को विचार करके छोडना चाहिए अविचार करके गृहस्थ जीवन छोडने पर भी छोड नहीं पाओगे। आपने कहा कि सन्यासी जीवन सरल नहीं है सन्यासी जीवन वह जी सकता है जिसने सबकुछ त्याग कर अपने आप को प्रभु को समर्पित कर दिया हो। आपने बताया कि शास्त्रों में यह भी बताया गया है कि सन्यासी होने से पूर्व आप अपनी पत्नी की भी व्यवस्था करके जाओ। स्वामी जी ने बताया कि सन्यासी चार प्रकार के होते है। कूटीचक, बहूदक, हंस और परमहंस होते है। चारों को अपना महत्व है और अपना त्याग है इसलिए सन्यासी जीवन आसान नहीं है अब पूरी तरह से छोडकर की प्रभु की खोज में निकला जा सकता है। इसलिए घर छोडने से पूर्व विचार कर लेना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में भगवान की आरती उतारी गई एवं प्रसाद वितरित किया गया। इस अवसर पर बडी संख्या में महिलाएं पुरूष उपस्थित थे।

अभिनंदन में चल रहा था मान्यता ... पेज 1 से जारी

किया जाकर अनुसंधान मे लिया गया है। पुलिस के मुताबिक राहुल पिता खेमचन्द्र जीनगर उम्र 32 साल निवासी अंजुमन स्कुल के सामने खानपुरा मंदसौर, सुभाष पिता भंवरलाल गुर्जर उम्र 42 वर्ष निवासी - हाउसिंग बोर्ड कालोनी प्रतापगढ, रणजीत पिता बाबुलाल भाटी जाति – हरिजन उम्र 44 साल निवासी – नई आबादी प्रतापगढ, पवन कुमार पिता राजेश कुमार त्रिपाठी उम्र 29 वर्ष निवासी – अग्रसेन नगर अभिनंदन कालोनी, शाहिद हुसैन पिता अब्दुल जब्बार अंसारी उम्र 38 साल निवासी ग्राम खिचलीपुरा, शाकिर खाँ पिता रईस खाँ जाति मुल्तानी मुस. उम्र 24 साल निवासी ग्राम पिपलोन कला चौकी पिपलोन कला जिला आगर मालवा, निजाम खाँ पिता नियाजु खाँ जाति मुल्तानी मुस. उम्र 30 साल निवासी निवासी ग्राम पिपलोन कला चौकी पिपलोन कला जिला आगर मालवा, दीपक चौहान पिता धन्नालाल चौहान उम्र 24 साल निवासी ग्राम लसुडिया राठौर थाना पिपलियामंडी, हुसैन पिता बाबु खां जाति सब्जी फरोश मुस. उम्र 374 साल निवासी नेहरु बस स्टेण्ड फुल वालो के पीछे मंदसौर, प्रदीप पिता पप्पु मनवानी उम्र 35 साल निवासी प्रेम कालोनी मंदसौर, महिपाल सिंह पिता कमल सिंह शक्तावत उम्र 32 साल निवासी सिन्दवन रेवास देवडा रोड मंदसौर 12- संदीप पिता श्याम भावसार उम्र 37 साल निवासी खानपुरा मंदसौर, सोनु मोटवानी पिता रुपेश मोटवानी उम्र 31 साल निवासी चक्रवर्ती कालोनी मंदसौर, कासम मोहम्मद पिता नाहर मोहम्मद उम्र 21 साल निवासी वाटर वर्क्स रोड़ प्रतापगढ राजस्थान को हिरासत में लिया गया।

संस्कृत विषय के पद शून्य कर... पेज 1 से जारी

माध्यमिक शिक्षक के संस्कृत विषय के पद शून्य कर दिए है। इससे स्कूलों में संस्कृत पढ़ाने वाले शिक्षक अतिशेष हो गए है।

यह है स्कूलों में व्यवस्था– प्रदेश के स्कूलों में छठवी से आठवीं तक के विद्यार्थियों को संस्कृत विषय माध्यमिक शिक्षक पढ़ाते हैं।वहीं नौवीं व 10वीं में संस्कृत विषय के माध्यमिक शिक्षक या उच्चतर माध्यमिक शिक्षक पढ़ाते है। वहीं 11वीं-12वीं में सिर्फ संस्कृत विषय के उच्च माध्यमिक शिक्षक व्याख्याता पढ़ाते हैं। विभाग ने हाई स्कूल व हायर सेकेंडरी स्कूलों में पढ़ाने वाले संस्कृत विषय के शिक्षकों को अतिशेष की सूची में डाल दिया है।

कनघट्टी में मनाया बाबा रामदेव जन्मोत्सव

पिपलियामंडी, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। गांव कनघट्टी में रैगर समाज ने बाबा रामदेवजी का जन्मोत्सव मनाया। इससे पूर्व रात्रि में जमले (भजन-कीर्तन) का आयोजन हुआ। बीज पर बैंड-बाजों के साथ गांव में चल समारोह निकाला, भक्ति गीतों पर माताओं-बहनों ने नृत्य किया। चल समारोह गांव मुख्य मार्ग होकर पुन: बाबा रामदेव मंदिर पहुंचा, जहां आरती के बाद प्रसाद वितरण हुआ। रैगर समाज के नरेन्द्र आर्य ने बताया जुलूस में समाज के साथ ही बडी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

जाहिर सूचना नाम परिवर्तन बाबत

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि RAJENDER KUMAR **ने अपना नाम परिवर्तन कर नया नाम** RAJENDRA KUMAR SHARMA **रख लिया है। भविष्य में इसी नाम से जाना पहचाना जावें।**

दिनांक-06.09.2024

******** भवदीय ********

RAJENDRA KUMAR SHARMA

S/o JANARDHAN DATT SHARMA

R/O 732, ABHINANDAN EXT-1, MANDSAUR (M.P.)

कार्यालय जिला परिवहन अधिकारी रतलाम (मप्र)

क्रमांक/ **मंदसौर दिनांक**

जाहिर सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि वाहन स्वामी श्री रमेशचंद्र पाटीदार पिता बापूलालजी पाटीदार निवासी ग्राम गोंदीधरमसी, तहसील जावरा, जिला रतलाम की मृत्यु दिनांक 08.10.2017 को हो गई है। इनके ट्रेक्टर जिसका रजिस्ट्रेशन क्रमांक एमपी 43 एए 7181 को इनकी पत्नी रेखाबाई पाटीदार ने अपने नाम पर अंतरण दर्ज कराने हेतु इस कार्यालय में मुल दस्तावेज प्रस्तुत किए है।

इस प्रकाशन अवधि के सात दिवस में यदि किसी व्यक्ति या संस्था को कोई आपत्ति हो तो मेरे समक्ष कार्यालय में प्रस्तुत करें, अन्यथा इसके पश्चात उक्त ट्रेक्टर को श्रीमती रेखाबाई पाटीदार के नाम अंतरण कर दिया जायेगा।

जिला परिवहन अधिकारी, रतलाम

दशपुर विद्यालय में शिक्षक दिवस मनाया

मंदसौर, 6 सितम्बर गुरु एक्सप्रेस। शहर के प्रतिष्ठित एवं शिक्षा में अग्रणी शैक्षणिक संस्था द्वशपुर विद्यालय में आज शिक्षकों के मान सम्मान के विशेष दिन शिक्षक दिवस को बडे ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम विद्यालय के प्राचार्य प्रिंस, वी थॉमस, सुपरवाइजर श्री हाकीस, प्रसाद शर्मा एवं वरिष्ठशिक्षिका श्रीमती प्रदसा साऊद्वारा डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन, एवं मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। दिप प्रज्वलन के दौरान संगीत शिक्षक श्री तेजपाल बारेड्र द्वारा माता सरस्वती के चरणों में अर्पित अपनी स्वर लहरियों से सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। विद्यालय के हेड बॉय रुचिर मूले एवं हेड गर्ल सकीना मुल्तानपुरा बाला ने विद्यालय प्राचार्य प्रिन्स ही थॉमस एवं सुपरवाइजर, श्री हाकिम प्रसाद शर्मा को तिलक एवं फूलों के गुलदस्ते भेंट कर उनका स्वागत किया। पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर राधाकृष्णन, को याद करते हुए कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों ने विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिकाओं का तिलक लगाकर, पुष्प भेंट कर एवं उनके व्यक्तित्व को बुसां करती एक-एक शायरी नुसा पंक्तियां अर्पित कर उनका स्वागत किया। विद्यालय के कक्षा 12वीं की छात्राओं परिधि पालीवाल, युक्ता सिसोदिसा एवं निकिता कोठारी ने गुरुजनों एवं शिक्षकों को समर्पित एक गीत प्रस्तुत किया। इसके बाद कक्षा 12वीं के ही कॉमर्स एवं साइस, संकाय के विद्यार्थियों ने एक से बढकर एक डांस प्रस्तुत किये। साथ ही शिक्षकों के लिए आकर्षक गेम्स का भी आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के शिक्षक श्री सचिन कुसावत विजय रहे। कक्षा 12वीं की छात्रा प्रियांशी उडिया एवं हेड गर्ल सकीला सुल्तानपुरा वाला ने शिक्षको के जीवन वृत पर आधारित अपनी कविताएं एवं विचार व्यक्त किया। विद्यालय की शिक्षिका सुश्री अपर्णा, रॉस ने अपनी सुमधुर आवाज में एक गीत प्रस्तुत किया, जिसने शिक्षक दिवस के कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। विद्यालय के प्राचार्य प्रिंस की थॉमस ने सभी शिक्षकों व विद्यार्थियों को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं एवं कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षकों द्वारा दी गई सीख एवं ज्ञान के माध्यम से छात्र हर कार्य के हुनर को जानकर सफल बनने में समर्थ हो जाते हैं। शिक्षक दिवस की महता तथा 'जीवन में एक अच्छे शिक्षक का होना कितना जरूरी है' यह भी समझाया। विद्यालय प्रबंधन द्वारा इस अवसर पर सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं दी गई। उन्हें उपहार प्रदान कर उनके लिए रात्रि भोज का आयोजन भी किया गया। पूरे कार्यक्रम का सफल संचालन कक्षा 12वीं की छात्राओं एकता चंदवाती, सकीला, बेगूंवाला, तनीषा, माली, निक्ति प्रवार, माही जैन द्वारा किया गया।

आवश्यकता है

दैनिक **गुरु एक्सप्रेस**

आफिस में कार्य करने हेतु युवक की आवश्यकता है।

वेतन योग्यता अनुसार

संपर्क

संपर्क समय- शाम 4 से 6 बजे तक

कार्यालय दैनिक गुरु एक्सप्रेस

9425105928. 8319964648

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in